■ वर्षः 21, अंकः 310 ■ दमण, सोमवार 31, अगस्त 2026 ■ पृष्ठः 8 ■ मूल्यः 2 रु ■ RNI NO-DDHIN/2005/16215 ■ संपादक- विजय जगदीशचंद्र भट्ट

दमण से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Asli Azadi Dainik @AsliAzadiDainik

asliazadidainikofficial

असली आज़ादी

दमण में मॉनसून फेस्टिवल में सिंगर कनिका कपूर ने बांधा समां:लाइट हाउस पर हजारों की भीड जुटी

■ सिंगर कनिका कपूर ने बेबी डॉल और चिट्टियां कलाइयां जैसे हिट गानों से लोगों के जीते दिल ■ जमकर झूमे युवा

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 30 अगस्त। संघ प्रदेश प्रशासन द्वारा आयोजित डीएनएच-डीडी मॉनसून फेस्टिवल में बिती रात बॉलीवुड सिंगर कनिका कपूर ने लाइव कॉन्सर्ट में अपने एक से बढकर एक बेबी डॉल' और 'चिट्टियां कलाइयां' जैसे गानों की प्रस्तुति देकर युवाओं को खूब झूमाया। मोटी दमण लाइट हाउस पर आयोजित सिंगर कनिका कपूर के लाइव कॉन्सर्ट को देखने के लिए हजारों की भीड उपस्थित थी। जिसमें 70 प्रतिशत से ज्यादा युवा दर्शक मौजूद थे। सिंगर कनिका कपूर ने युवाओं की फरमाइश को भी तवज्जों दी। इतना ही नहीं लाइव परफार्मेंस देते-देते सिंगर कनिका कपूर युवाओं के बीच भी पहुँच गयी थी। गौरतलब है कि प्रशासक प्रफुल पटेल के मार्गदर्शन में संघ प्रदेश प्रशासन के पर्यटन विभाग द्वारा डीएनएच-डीडी मॉनसून फेस्टिवल का आयोजन किया गया है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मॉनसून फेस्टिवल में जनता और पर्यटकों की भागीदारी से नए रिकार्ड कायम किए है। कल अरब सागर के किनारे सिर्फ लाइट हाउस का मैदान ही नहीं बल्कि रामसेतु भी पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों से पूरी तरह से भर चुका था।

लोकसभा में दमण-दीव का तीन बार प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्व सांसद लालू पटेल का जन्मदिन आज

■ सरपंच से सांसद तक का सफर लालू पटेल ने जमीनी स्तर की राजनीति करके तय किया था

■ 2009, 2014 और 2019 में हैट्रिक जीत हासिल कर सभी का ध्यान आकर्षित किया था

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 30 अगस्त। देश के सबसे बड़ी पंचायत लोकसभा में दमण-दीव का लगातार तीन बार प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्व सांसद लालू पटेल का आज जन्मदिन है। ऐसे तो लालू पटेल 90 के दशक से ही राजनीति में सक्रिय थे, लेकिन जनप्रतिनिधि के रूप में उनकी पारी वर्ष 2000 में सरपंच चुने जाने के साथ शुरू हुई। वर्ष 2005 में लालू पटेल ने मोटी दमण की पटलारा सीट से जिला पंचायत सदस्य का चुनाव जीत कर यह बता दिया की उनकी राजनीति सिर्फ अपने गांव तक सीमित नहीं है। वर्ष 2009 में तत्कालीन गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी जी को भारतीय जनता पार्टी ने गुजरात की 26 और संघ प्रदेश दमण-दीव एवं संघ

प्रदेश दादरा नगर हवेली की 2 और सीटों की जिम्मेदारी सौंपी थी। नरेंन्द्र मोदी ने ही 2009 में लालू पटेल पर विश्वास जताते हुए पार्लामेंट्री बोर्ड से दमण-दीव लोकसभा सीट का टिकट दिलाया था। लालू पटेल ने 25000 वोटों से चुनाव जीतकर नरेंद्र मोदी और पार्टी के भरोसे पर खरे उतरे थे। भाजपा 2014, 2019 और 2024 में भी लालू पटेल पर भी दांव खेला था। 2014 और 2019 में भी लालू पटेल ने जीत हासिल कर लोकसभा में जीत की हैट्रिक लगाई थी। हालांकि, 2024 के लोकसभा चुनाव में लालू पटेल ने अपनी परंपरागत रणनीति को छोडकर सिर्फ और सिर्फ पार्टी संगठन के भरोसे चुनावी मैदान में उतरे थे। जिसके कारण उन्हें हार का सामना करना पड़ा। हालांकि पूर्व सांसद लालू पटेल आज भी राजनीति में सक्रिय है। आज भी उनको मानने वाला एक बड़ा समर्थक वर्ग है। आज उनके जन्मदिन पर उनके शुभेच्छक और उनके समर्थक उन्हें जन्मदिन की बधाईयां देंगे। असली आजादी परिवार पूर्व सांसद लालू पटेल को उनके जन्मदिन पर दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की कामना करता है।

मेमू ट्रेन पर पथराव मामला : वायरल वीडियो से 6 आरोपी पकड़े गए

वाराणसी (एजेंसी)। वाराणसी से प्रयागराज जा रही एक मेमू ट्रेन पर पिछले महीने हुए पथराव के आरोप में रेलवे पुलिस ने छह लोगों को पकड़ा है। इनमें चार वयस्क और दो नाबालिग शामिल हैं। यह घटना भदोही जिले के अहिमनपुर रेलवे पड़ाव पर 28 अगस्त को यात्रियों से विवाद के बाद हुई थी। पुलिस ने रविवार को बताया कि अहिमनपुर पड़ाव पर कुछ लोगों ने यात्रियों से विवाद के बाद रेल लाइन की गिट्टियों से ट्रेन पर पथराव कर दिया था। घटना का वीडियो एक यात्री ने बनाया था, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। वायरल वीडियो का संज्ञान लेते हुए, प्रयागराज के आरपीएफप्रभारी निरीक्षक और ज्ञानपुर रोड जीआरपी की टीम ने आरोपियों की पहचान की। शनिवार देर शाम अहिमनपुर के आसपास से कृष्ण कुमार यादव, अभिषेक प्रजापति, आदर्श प्रजापति, आदित्य गुप्ता (सभी 18 से 20 वर्ष) और दो नाबालिगों को पकड़ा गया। ये सभी भदोही के औराई थाना क्षेत्र के निवासी हैं। चार वयस्कों को गिरफ्तार कर लिया गया है, जबकि नाबालिगों को हिरासत में लिया गया। पथराव में कोई घायल नहीं हुआ, लेकिन यात्रियों में दहशत फैल गई। आरोपियों पर संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

पश्चिमी दिल्ली में लकड़ी के गोदाम में लगी भीषण आग

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिमी दिल्ली के राजधानी मेट्रो स्टेशन के पास रविवार तड़के लकड़ी और प्लाईवुड के एक विशाल कारखाने में भीषण आग लग गई। दिल्ली अग्निशमन सेवा ने आग बुझाने के लिए तत्काल 25 दमकल गाड़ियों को मौके पर भेजा। हालांकि, इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है, जिससे एक बड़ी राहत मिली है। अधिकारियों ने बताया कि असम टिंबर मार्केट में स्थित लकड़ी के इस गोदाम में आग लगने की सूचना तड़के करीब 3 बजे प्राप्त हुई। आग की भयावहता को देखते हुए, शुरुआती नौ दमकल गाड़ियों के बाद अतिरिक्त वाहनों को सेवा में लगाया गया और सुबह 3ः24 बजे आग को भीषण घोषित किया गया। आग पर सुबह करीब साढ़े छह बजे तक पूरी तरह काबू पा लिया गया। अग्निशमन अधिकारियों के अनुसार, यह आग 2,000 वर्ग गज में फैली एक बहुमंजिला इमारत के तहखाने में बने लकड़ी के गोदाम में लगी थी। इस इमारत में तहखाना, भूतल/स्टिल्ट और ऊपर की दो मंजिलें शामिल थीं। समय रहते अग्निशमन कर्मियों की त्वरित कार्रवाई और बड़ी संख्या में गाड़ियों की तैनाती से जानमाल के नुकसान को टाला जा सका।

पलवल मस्जिद में छात्रा से दुष्कर्म : रिश्तेदार गिरफ्तार

पलवल(एजेंसी)। हरियाणा के पलवल जिले के हसनपुर में मस्जिद के अंदर एक 11 वर्षीय नाबालिग छात्रा से दुष्कर्म का सनसनीखेज मामला आया है। छात्रा अपने पिता का मोबाइल चार्जर लेने मस्जिद गई थी, जब उसके 30 वर्षीय रिश्तेदार ने छात्रा को अपनी हवस का शिकार बनाया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। मंगलवार को हुई घटना में, पीड़िता के पिता जो मस्जिद के मौलवी हैं, उन्होंने ही आरोपी के ठहरने का इंतजाम मस्जिद परिसर में किया था। छठी कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा दोपहर में अपने पिता के कमरे से चार्जर लेने गई थी। अकेला पाकर आरोपी ने नाबालिग छात्रा को एक कमरे में बुलाया, दरवाजा बंद कर उसके साथ दुष्कर्म किया। कुछ देर बाद छात्रा के वापस न लौटने पर उसकी मां को शक हुआ। मस्जिद पहुंचने पर मां ने बच्ची के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। पीड़िता के पिता और अन्य लोगों ने मिलकर कमरे का दरवाजा तोड़कर छात्रा को बचाया, लेकिन आरोपी घटनास्थल से भागने में सफल रहा। सूचना मिलने पर पुलिस ने पीड़िता को पलवल के सिविल अस्पताल पहुंचाया, जहां मेडिकल जाँच में दुष्कर्म की पुष्टि हुई। दो दिन के इलाज के बाद पीड़िता को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। पुलिस ने बताया कि आरोपी के खिलाफ पॉक्सो एक्ट की धारा 6 के तहत एफआईआर दर्ज कर गिरफ्तार किया गया।

बिहार के मंत्री पर महिला से अभद्र व्यवहार का आरोप

-संजय सिंह ने दी राजनीति छोड़ने की चुनौती

पटना (एजेंसी)। जनशक्ति जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेज प्रताप यादव ने बिहार सरकार के मंत्री संजय कुमार सिंह पर गंभीर आरोप लगाए हैं। यादव ने दावा किया है कि महुआ से विधायक संजय सिंह ने दिल्ली के एक होटल में महिला कर्मचारी के साथ कथित तौर पर अभद्र व्यवहार किया।

तेज प्रताप के अनुसार, इस घटना को होटल स्टाफ के हस्तक्षेप के बाद संभाला गया और फिर करीब 25 लाख रुपये के कथित लेन-देन के माध्यम से मामले को रफा-दफा किया। तेज प्रताप ने इन आरोपों की गहन और निष्पक्ष जांच की मांग कर कहा है कि जनता को सच्चाई जानने का अधिकार है और दोषी पाए जाने पर कानून के अनुसार कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होंने मंत्री के राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन को लेकर भी सवाल उठाए हैं। इन आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए मंत्री संजय सिंह ने अपनी सफाई में कहा है कि अगर उनके खिलाफ कोई पुख्ता सबूत मिलता है, तब वह राजनीति छोड़ दूंगा।

युवाओं तक पार्टी की पहुंच बनाने की विस्तृत योजना पर चर्चा

-भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने युवा आउटरीच और चुनावी रणनीति पर की अहम बैठक

नई दिल्ली, एजेंसी।
भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने शनिवार को दिल्ली में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। इस दौरान युवाओं तक पार्टी की पहुंच बनाने की विस्तृत योजना पर चर्चा की गई। सूत्रों ने बताया कि आगामी विधानसभा चुनावों, विशेषकर उत्तर प्रदेश, पंजाब और गुजरात सहित सात राज्यों में होने वाले चुनावों के लिए पार्टी की तैयारियों को लेकर बैठक में चर्चा की गई।

बैठक में भाजपा युवा मोर्चा के नवनियुक्त अध्यक्ष हेमांग जोशी सहित पूर्व अध्यक्ष अनुराग ठाकुर, पूनम महाजन और तेजस्वी सूर्या जैसे प्रमुख युवा चेहरे शामिल रहे। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव, युवा मामलों एवं खेल मंत्री मनसुख मांडविया और केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके अतिरिक्त, पूर्व केंद्रीय मंत्री व भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव स्मृति ईरानी, गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी और छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा जैसे नेता भी बैठक में शामिल हुए। सूत्रों के अनुसार, भाजपा ने महत्वपूर्ण विमर्श के लिए देशभर से 40 से अधिक नेताओं को आमंत्रित किया था, हालांकि बैठक में हुई चर्चाओं पर पार्टी की ओर से कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया।

यह बैठक तब हुई है जब भाजपा 17 सितंबर से देशव्यापी 'सेवा संकल्प अभियान' शुरू करने की तैयारी में है, जो एक महीने तक जारी रहेगा। यह अभियान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन में 25 वर्ष पूरे होने और सरकार के प्रमुख के रूप में उनके उल्लेखनीय योगदान को रेखांकित करने के उद्देश्य से चलाया जाएगा। इस अभियान को शुरू करने का निर्णय 22 अगस्त को पार्टी के 67 नवनियुक्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों की पहली बैठक में लिया गया था, जिसमें भाजपा की राज्य इकाइयों के अध्यक्षों, संगठन महामंत्रियों और अन्य वरिष्ठ नेताओं ने भी हिस्सा लिया था। इस देशव्यापी अभियान के दौरान, भाजपा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के हर वर्ग तक अपनी पहुंच बनाएगी।

सोनिया गांधी नागरिकता मामले की फैसला सुनाने की तारीख बढ़ाई

-दिल्ली की अदालत ने पुनरीक्षण याचिका पर फैसला सुनाने की तारीख 21 सितंबर की

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेत्री सोनिया गांधी की नागरिकता से जुड़े विवाद में दिल्ली की अदालत ने शनिवार को अपना आदेश टाल दिया। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने 11 सितंबर 2025 के मजिस्ट्रेट अदालत के फैसले को चुनौती देने वाली पुनरीक्षण याचिका पर आदेश सुनाने की तारीख बढ़ाकर 21 सितंबर कर दी है। मामले की सुनवाई के दौरान सोनिया गांधी की ओर से उनके वकील ने जवाब दाखिल किया। बचाव पक्ष ने शिकायत को राजनीतिक रूप से प्रेरित बताते हुए कहा कि इसे किसी अन्य उद्देश्य से दायर किया गया है। वकील ने शिकायत के पीछे राजनीतिक मंशा होने का भी आरोप लगाया। यह शिकायत राउज एवेन्यू अदालत की सेंट्रल दिल्ली कोर्ट बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष अधिवक्ता विकास त्रिपाठी की ओर से दायर की गई थी। मजिस्ट्रेट अदालत ने शिकायत को खारिज कर दिया था। अब निचली अदालत के इसी फैसले के खिलाफ दायर पुनरीक्षण याचिका पर विशेष अदालत का फैसला 21 सितंबर को आने की संभावना है।

मैं राहुल गांधी के हाथों पीना चाहता था जूस, सम्मानजनक तरीके से चाहता अनशन तोड़ना

-36 दिनों तक अनशन करने वाले वांगचुक ने बताया 20 जुलाई का क्या था प्लान

नई दिल्ली, एजेंसी।
नीट पेपर लीक के खिलाफ कॉकरोच जनता पार्टी के प्रदर्शन और संसद मार्च को लेकर 36 दिनों तक अनशन करने वाले सोनम वांगचुक ने कहा कि वह चाहते थे राहुल गांधी उनका अनशन तुड़वाएं और अपने हाथों से पिलाएं जूस। वांगचुक ने कहा कि वह चाहते थे कि सम्मानजनक तरीके से वह अनशन खत्म करें। उन्होंने यह भी बताया कि 20 जुलाई को संसद मार्च को लेकर उनका क्या प्लान था। वांगचुक ने कहा कि हमने कहा था कि मैं और 12 दिन किसी तरह अनशन कर लूंगा लेकिन हम लोग 20 जुलाई को संसद जाएंगे और सांसदों को अपना ज्ञापन देंगे।

उन्होंने कहा कि इसके बाद हमने पूछा कि 20 जुलाई को कितने लोग आ सकते हैं। आशुतोष ने कहा 10 हजार, सौरभ ने कहा 15 हजार। उनकी उम्मीद कुछ इस तरह की थी, लेकिन मुझे लगता था कि एक लाख से ज्यादा लोग आए थे। उन्होंने कहा कि हमने कहा कि अगर सत्ता पक्ष की तरफ से कुछ नहीं होता है तो विपक्ष के सांसदों से मिलेंगे। पवन खेड़ा मंच पर भी आए थे। हमारी सोच थी कि विपक्ष के लोग हमें रिसीव करें। हमने कभी नहीं सोचा था कि कोई तोड़फोड़ होगी। हमने सोचा था कि हम संसद जाकर यह मसला सांसदों को सौंप देंगे और कहेंगे कि हमसे जो कुछ हो सका हमने किया। अब आप लोग इसकी जिम्मेदारी लें और संसद से रास्ता निकालें। तब बात कि विपक्ष के नेता राहुल गांधी से अनशन तोड़वाएं। हम यही सोच रहे थे कि कैसे सम्मानजनक तरीके से आंदोलन खत्म किया जाए।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक वांगचुक ने कहा कि हमारी सोच यही थी कि अगर सरकार के लोग नहीं आते हैं तो विपक्ष के नेता जूस पिलाकर अनशन तुड़वाएं और इसके बाद आगे की जिम्मेदारी लें। फिर 18 तारीख को मुझे जबरन उठा लिया गया। सीजेपी संस्थापक अभिजीत दीपके ने भी एक इंटरव्यू में कहा था कि सोनम वांगचुक उनके आंदोलन का प्रमुख चेहरा थे। उनके अनशन और बिगड़ती सेहत की चिंता उन्हें भी हो रही थी लेकिन वह अनशन तोड़ने को तैयार नहीं थे। दीपके ने कहा बाद में उन्हें किडनैप करवा लिया गया। वहां उनसे सिर्फ सरकार के लोग ही मिल सकते थे। हमें मिलने की इजाजत नहीं दी गई।

भारत से राहत सामग्री लेकर काठमांडू पहुंची चौथी उड़ान

-आईएएफ के सी-130 विमान से 11 टन राहत सामग्री, खोज-बचाव उपकरण और फोरेंसिक टीम भेजी गई; अब तक 68.5 टन मदद पहुंची

नई दिल्ली, एजेंसी।
नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ के बाद राहत और बचाव अभियान को मजबूत करने के लिए भारत ने मदद का दायरा बढ़ा दिया है। भारतीय वायुसेना (आईएएफ) का सी-130 विमान राहत सामग्री और तकनीकी उपकरणों से लैस होकर काठमांडू पहुंचा। यह भारत की ओर से नेपाल भेजी गई चौथी राहत उड़ान है। विमान में खोज, बचाव और राहत कार्यों के लिए जरूरी उपकरणों के साथ विशेषज्ञ टीमें भी भेजी गई हैं।

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर बताया कि भारत की चौथी उड़ान काठमांडू पहुंच गई है। इसमें नेपाल में जारी बचाव और राहत अभियानों को मजबूत करने के लिए जरूरी सामान और तकनीकी क्षमताएं भेजी गई हैं। इससे पहले जयशंकर ने बताया था कि इस उड़ान में करीब 11 टन राहत सामग्री भेजी गई है।

फोरेंसिक विशेषज्ञ और डीएनए जांच उपकरण भी भेजे

सी-130 विमान में खोज एवं बचाव उपकरणों के अलावा फोरेंसिक विशेषज्ञों की टीम और डीएनए जांच के उपकरण भी भेजे गए हैं। राहत सामग्री में कंबल, स्लीपिंग बैग, तिरपाल, प्लास्टिक शीट और हाइजीन किट शामिल हैं। इन सामानों का इस्तेमाल बाढ़ प्रभावित लोगों को तत्काल राहत पहुंचाने और बचाव अभियानों में किया जाएगा। जयशंकर ने कहा कि भारत नेपाल में बाढ़ से क्षतिग्रस्त जरूरी बुनियादी ढांचे को बहाल करने में भी सहायता कर रहा है। 230 फुट लंबे सिंगल लेन मॉड्यूलर स्टील ब्रिज के निर्माण के लिए जरूरी उपकरण लेकर 16 ट्रक नेपाल पहुंच चुके हैं। इसके अलावा सात और बेली ब्रिज लगाने के लिए उपकरण जल्द भेजे जाएंगे। पुलों के निर्माण के लिए जरूरी तकनीकी टीमें भी नेपाल पहुंचेंगी।

अब तक 68.5 टन राहत सामग्री पहुंची

भारत की ओर से अब तक कुल 68.5 टन राहत सामग्री हवाई मार्ग से काठमांडू पहुंचाई जा चुकी है। इसमें जरूरी दवाएं, पोर्टेबल जनरेटर सेट, खाद्य पैकेट, पानी साफ करने वाली गोलियां और अन्य तकनीकी उपकरण शामिल हैं। जयशंकर ने कहा कि नेपाल के राहत और बचाव कार्यों में भारत का सहयोग लगातार जारी रहेगा।

पहले भी भेजी गई थी बड़ी खेप

विदेश मंत्रालय के मुताबिक, भारत ने बुधवार को नेपाल के लिए आपातकालीन राहत अभियान शुरू किया था। आईएएफ के सी-130जे हरक्यूलिस विमान ने पहली खेप में करीब 10 टन राहत सामग्री पहुंचाई थी। इसमें अस्थायी आश्रय, कंबल, हाइजीन किट, सोलर लैंप और दवाएं शामिल थीं। इसके बाद गुरुवार को आईएएफ के सी-17 ग्लोबमास्टर विमान से 37.5 टन अतिरिक्त राहत सामग्री नेपाल भेजी गई। इसमें 28.5 टन टेंट, कंबल, हाइजीन किट, सोलर लैंप, पानी निकालने वाले पंप, किचन सेट और जनरेटर सेट शामिल थे। इसके अलावा आठ टन दवाएं और एक टन खाद्य सामग्री भी भेजी गई।

नेपाल में बाढ़ में लापता भारतीयों को बचाने कांग्रेस सांसद ने की सरकार की तारीफ

-शशि थरुर ने एनडीआरएफ की टीम और हेलिकॉप्टर उपलब्ध कराने की मांग की

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने विदेश मंत्री एस जयशंकर को पत्र लिखकर नेपाल में बाढ़ में लापता भारतीयों को बचाने के लिए सरकार की कोशिशों की तारीफ की और साथ ही सुझाव भी दिए। नेपाल में अचानक आई बाढ़ के बाद कई भारतीय अभी भी लापता हैं। विदेश मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक इनकी संख्या 287 है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक थरूर ने अपने पत्र में केंद्र सरकार से बचाव कार्यों के लिए एनडीआरएफ की पूरी टीम और हेलिकॉप्टर उपलब्ध कराने की मांग की। उन्होंने सरकार से अपील की कि फंसे हुए लोगों या मलबे के नीचे दबे जीवित लोगों को बचाने के लिए हर संभव कोशिश की जाए। थरूर ने पत्र में कहा कि जैसे-जैसे समय बीत रहा है। उम्मीद की गुंजाइश कम होती जा रही है। उन्होंने कहा कि मैं आपको उन भारतीय नागरिकों के बारे में लिख रहा हूं, जो 26 अगस्त को नेपाल में आए अचानक बाढ़ के बाद से लापता हैं। भारत की प्रतिक्रिया तेज और असरदार रही है। प्रधानमंत्री का काठमांडू से तुरंत संपर्क करना, राहत सामग्री भेजना, रेस्क्यू एक्सपर्ट्स की टीम भेजना और कंट्रोल रूम व दूतावास की हेल्पलाइन शुरू करना-इन सभी कदमों से फर्क पड़ा है। बता दें पिछले बुधवार को नेपाल-तिब्बत सीमा के पास ग्लेशियर के ढहने से बर्फ और चट्टानों का एवलांच आया, जिससे पानी, कीचड़ और मलबे का सैलाब नीचे की ओर बह निकला। इसने मध्य नेपाल में कस्बों और गांवों को तबाह कर दिया, जरूरी बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचाया और पनबिजली स्टेशनों को बहा ले गया। शनिवार तक बाढ़ से मरने वालों की संख्या बढ़कर 669 हो गई, जबकि 2,000 से ज्यादा लोग अभी भी लापता हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे के मंच शुद्धिकरण पर भड़कीं प्रियंका गांधी वाड्रा

पीएम मोदी से एफआईआर की मांग

नई दिल्ली, एजेंसी।
कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने हल्द्वानी में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की रैली के मंच के शुद्धिकरण को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर हमलावार है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मांग की है कि यदि वे वास्तव में संविधान का सम्मान करते हैं, तब घटना में शामिल लोगों के खिलाफ अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति (एससी/एसटी) कानून के तहत प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज कराए।

प्रियंका गांधी वाड्रा ने अपनी पोस्ट में कहा कि हल्द्वानी में कांग्रेस नेता खरगे की रैली के बाद भाजपा-आरएसएस से जुड़े लोगों द्वारा मंच का शुद्धिकरण किया गया। उन्होंने इस कृत्य को निंदनीय और शर्मनाक मानसिकता का प्रतीक बताकर संविधान और एससी/एसटी कानून का गंभीर उल्लंघन और अपराध करार दिया। कांग्रेस महासचिव ने घटना को 20 दिन बीत जाने के बावजूद प्रधानमंत्री मोदी और उनकी सरकार की ओर से कोई कार्रवाई न होने पर सवाल उठाया है। उन्होंने कहा कि अगर प्रधानमंत्री मोदी देश के संविधान का सम्मान करते हैं, तब उन्हें उत्तराखंड में इस अपराध में शामिल लोगों के खिलाफ तुरंत एफआईआर करवाकर एससी/एसटी कानून के तहत कार्रवाई होनी चाहिए। प्रियंका गांधी वाड्रा ने इस बारे में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के बयान का हवाला दिया, जिन्होंने इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री मोदी से त्वरित कार्रवाई की मांग की थी।

राहुल गांधी ने घटना को छुआछूत के समान बताकर भाजपा-आरएसएस की मानसिकता को इसका जिम्मेदार ठहराया था। उन्होंने दोषियों के खिलाफ एससी/एसटी कानून के तहत मामला दर्ज करने की मांग करके आरोप लगाया कि 20 दिन बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। राहुल गांधी ने कहा कि भाजपा की उत्तराखंड इकाई के अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने 'शुद्धिकरण' का बचाव किया, जबकि प्रधानमंत्री मोदी इस मामले पर चुप हैं। कांग्रेस ने अध्यक्ष खरगे के लिए न्याय की मांग कर केंद्र और राज्य सरकारों पर इस मामले में कार्रवाई करने का दायित्व बताया है। प्रियंका और राहुल गांधी दोनों ने प्रधानमंत्री मोदी के उस बयान पर सवाल उठाए हैं, जिसमें वे खुद को हर जाति से जुड़ा और पूरे देश का प्रधानमंत्री बताते हैं, जबकि उनकी पार्टी के नेता इसतरह के कृत्यों का बचाव कर रहे हैं।

अभिषेक बनर्जी की बढ़ीं मुश्किलें : बिलबोर्ड विवाद मामले में टीएमसी सांसद को पुलिस का नोटिस, अब तक 14 गिरफ्तार

कोलकाता, एजेंसी।
इस हफ्ते की शुरुआत में पार्टी के निशान वाले बिलबोर्ड को हटाने के विवाद में कोलकाता पुलिस ने टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी को नोटिस जारी किया है। इस विवाद के दौरान अभिषेक बनर्जी के कार्यालय में अधिकारियों और प्राइवेट गार्ड्स के बीच हाथापाई हुई थी। बनर्जी को उनके घर पर यह नोटिस दिया गया। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि डायमंड हार्बर के सांसद से कहा गया है कि वे इस मामले के सिलसिले में मंगलवार दोपहर शेक्सपियर सरणी पुलिस स्टेशन में पेश हों।

अधिकारियों ने बताया कि इस घटना के सिलसिले में तीन एफआईआर दर्ज की गई हैं, जिनमें से दो में बनर्जी को आरोपी बनाया गया है। एफआईआर में डेरेक ओब्रायन और पूर्व विधायक हुमायूं कबीर समेत पार्टी के अन्य नेताओं के नाम भी शामिल हैं। अधिकारियों के मुताबिक, डेरेक ओ ब्रायन को रविवार को नोटिस दिया गया। गुरुवार को अभिषेक बनर्जी के ऑफिस के प्राइवेट गार्ड्स, उनके समर्थकों और पार्टी के कुछ नेताओं की पुलिस और कोलकाता म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के अधिकारियों के साथ हाथापाई हुई थी। वे उन्हें कैमक स्ट्रीट पर स्थित इमारत में घुसने और एक अनधिकृत बिलबोर्ड को हटाने से रोकने की कोशिश कर रहे थे। हालांकि वहां मौजूद टीएमसी के राज्यसभा सांसद डेरेक ओ ब्रायन ने प्राइवेट गार्ड्स द्वारा विरोध की कोशिशों की खबरों को फर्जी बताया। उन्होंने कहा कि गार्ड्स इमारत के प्रवेश द्वार पर ड्यूटी पर तैनात थे। इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल पर सडक़ की ओर बने लोहे के ढांचे पर लगे टीएमसी के निशान वाले बिलबोर्ड को केएमसी के कर्मचारियों ने हटा दिया, जब पुलिस ज़बरदस्ती अंदर घुस गई। डेरेक ओ ब्रायन ने आरोप लगाया था कि पुलिस एक गैर-कानूनी नोटिस लेकर ऑफिस में घुस गई, वरिष्ठ नेताओं के साथ मारपीट की और पार्टी समर्थकों व ऑफिस के कर्मचारियों के साथ बदसलूकी की।

भारत से अच्छे रिश्ते बांग्लादेश के अपने हित में, शेख हसीना का बयान

नई दिल्ली, एजेंसी।
बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने एक इंटरव्यू में भारत के साथ संबंधों पर बेबाकी से अपनी राय रखी। उन्होंने साफ किया कि भारत के साथ अच्छे रिश्ते रखना बांग्लादेश के अपने राष्ट्रीय हित में है, न कि दिल्ली पर कोई अहसान कर रहा है। यह बयान तब आया है जब तारिक रहमान के भारत आगमन पर संशय बना हुआ है और दोनों देशों के रिश्तों में कथित खटास देखी जा रही है, यहां तक कि बांग्लादेश सरकार ने हसीना की भारत में उपस्थिति को संबंधों में बड़ी अड़चन बताया है। आंतरिक राजनीति पर टिप्पणी कर हसीना ने मोहम्मद यूनुस और तारिक रहमान के शासन की कड़ी आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि उनके दौर में केवल सत्ता के चेहरे बदले हैं, दिशा नहीं, यूनुस ने बदले की भावना और संस्थाओं को खत्म करने की राजनीति शुरू की, इस रणनीति को पीएम तारिक रहमान ने जारी रखा। हसीना ने चिंता व्यक्त की कि अवामी लीग के कार्यकाल में 6.80 प्रतिशत रही जीडीपी वृद्धि अब 2.22त्न पर आ चुकी है, और देश को आर्थिक बर्बादी व अराजकता की ओर धकेला जा रहा है, जिससे औद्योगिक उत्पादन में भी भारी गिरावट आई है।

सक्रिय राजनीति में अपनी भूमिका को निजी महत्वाकांक्षा नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी बताकर हसीना ने कहा कि वे अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं के संपर्क में हैं। उन्होंने लोगों से उम्मीद न छोड़ने का आग्रह किया, याद दिलाया कि बांग्लादेश का जन्म बलिदान और धर्मनिरपेक्ष आदर्शों से हुआ है। उन्होंने आह्वान किया कि देशवासियों ने पहले भी पाकिस्तानी सेना और सैन्य शासन जैसी चुनौतियों को हराया है, और वे इस काले अध्याय को भी पराजित कर देने वाले हैं। हसीना लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, विकास और सम्मान की बहाली के लिए बांग्लादेश के लोगों के साथ खड़ी हैं।

भारत-बांग्लादेश संबंधों के महत्व को रेखांकित कर हसीना ने कहा कि ये रिश्ते इतिहास, भूगोल, स्वतंत्रता संग्राम, सुरक्षा, व्यापार और 1971 के बलिदान से गहरे जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि ढाका में किसी भी सरकार को यह समझना चाहिए कि भारत के साथ अच्छे संबंध ढाका के अपने राष्ट्रीय हित में हैं। उनके अनुसार, एक लोकतांत्रिक और स्थिर बांग्लादेश ही भारत के लिए सबसे अच्छा पड़ोसी साबित हो सकता है,

और इसी से क्षेत्रीय सहयोग व राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा संभव है।

नशाबंदी वाले गुजरात में उठी अनोखी मांग: नारगोल में नियंत्रित अनुमति के साथ फिर शुरू हो ताड़ी का पारंपरिक कारोबार

भंडारी और पारसी समाज के परिवारों की आजीविका का सवाल; पर्यटन, रोजगार और सरकारी राजस्व बढ़ने की भी जताई उम्मीद

वलसाड (ईएमएस)। गुजरात में कड़े शराबबंदी कानून के बीच वलसाड जिले के खूबसूरत समुद्री पर्यटन स्थल नारगोल से एक अलग और महत्वपूर्ण मांग सामने आई है। वर्षों से ताड़ी के पारंपरिक व्यवसाय से जुड़े भंडारी और पारसी समाज के परिवारों ने अपनी आजीविका और रोजगार के संकट को देखते हुए सरकार से नियंत्रित अनुमति के साथ ताड़ी की बिक्री शुरू करने की मांग की है। नारगोल केवल अपने आकर्षक समुद्री तट के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि यहां और आसपास के क्षेत्रों में ताड़ी का पारंपरिक व्यवसाय भी लंबे समय तक अनेक परिवारों की आजीविका का प्रमुख साधन रहा है। भंडारी और पारसी समाज के लोग गांव की वाड़ियों और खेतों में मौजूद खजूर के पेड़ों से ताड़ी प्राप्त कर मुंबई सहित बड़े शहरों में इसका कारोबार करते थे। लेकिन गुजरात में शराबबंदी कानून लागू होने के बाद यह पारंपरिक व्यवसाय पूरी तरह बंद हो गया। समय बीतने के बावजूद इस कारोबार से जुड़े परिवारों को न तो कोई विशेष आर्थिक राहत पैकेज मिला और न ही पर्याप्त वैकल्पिक रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सके। इसका परिणाम यह हुआ कि आज भी कई परिवार आर्थिक परेशानियों का सामना कर रहे हैं। अब स्थानीय ग्राम पंचायत की ओर से भी सरकार के समक्ष शराबबंदी नियमों में सीमित और नियंत्रित ढील देने की मांग रखी गई है। हालांकि स्थानीय लोगों की मांग ताड़ी की बिक्री को पूरी तरह खुली छूट देने की नहीं है, बल्कि निश्चित स्थानों, लाइसेंस और कड़े नियमों के तहत नियंत्रित बिक्री की अनुमति देने की है। स्थानीय लोगों का मानना है कि प्राकृतिक पेय के रूप में पहचानी जाने वाली ताड़ी की नियंत्रित बिक्री को मंजूरी मिलने से कई स्तरों पर लाभ हो सकते हैं। एक ओर अवैध रूप से बनने वाली नकली और घटिया शराब के कारोबार पर अंकुश लगाया जा सकता है, वहीं जहरीली शराब और लठ्ठाकांड जैसी घटनाओं को रोकने में भी मदद मिल सकती है। इसके अलावा सरकार को भी राजस्व प्राप्त हो सकता है।

पर्यटन को मिल सकती है नई रफ्तार

नारगोल समुद्र तट वलसाड जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों में शामिल है और यहां हर वर्ष बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। क्षेत्र के पर्यटन विकास को नई दिशा मिलने की उम्मीद के बीच भविष्य में विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ने की भी संभावना जताई जा रही है। जानकारों का मानना है कि नारगोल की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और पर्यटन संभावनाओं को देखते हुए यदि नियंत्रित व्यवस्था के तहत पारंपरिक ताड़ी व्यवसाय को अनुमति दी जाती है, तो होटल, रिसॉर्ट और पर्यटन क्षेत्र में स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा हो सकते हैं।

शराबबंदी पर फिर शुरू हुई बहस

राज्य में शराबबंदी के बावजूद अवैध शराब का कारोबार लगातार चर्चा का विषय रहा है। स्थानीय लोगों का तर्क है कि जहां एक ओर अवैध कारोबार से जुड़े लोग भारी मुनाफा कमाते हैं, वहीं शराब का सेवन करने वाले लोग ऊंची कीमतें चुकाने को मजबूर होते हैं। नकली और जहरीली शराब के कारण समय-समय पर होने वाली त्रासदियों ने भी शराबबंदी व्यवस्था को लेकर बहस को जीवित रखा है। इसी बीच नारगोल से उठी यह मांग शराबबंदी के मुद्दे पर एक नया और अपेक्षाकृत अलग दृष्टिकोण सामने रखती है। यहां की मांग केवल शराब की बिक्री की अनुमति देने तक सीमित नहीं है, बल्कि पारंपरिक रोजगार, नियंत्रित व्यवस्था, पर्यटन विकास और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने से जुड़ी हुई है। अब सभी की निगाहें गुजरात सरकार के फैसले पर टिकी हैं। सवाल यह है कि क्या शराबबंदी वाले गुजरात में नारगोल की इस अनोखी मांग को गंभीरता से लिया जाएगा? और क्या भंडारी सहित ताड़ी के पारंपरिक व्यवसाय से जुड़े परिवारों को नियंत्रित अनुमति के माध्यम से फिर से रोजगार का अवसर मिलेगा? नारगोल की भौगोलिक पहचान, पर्यटन क्षमता और वहां के लोगों की आजीविका से जुड़ा यह मुद्दा अब सरकार के सामने एक महत्वपूर्ण सवाल बनकर खड़ा है। आने वाले दिनों में सरकार का फैसला तय करेगा कि क्या गुजरात में ताड़ी जैसे पारंपरिक व्यवसाय को नियंत्रित व्यवस्था के तहत फिर से जीवंत किया जा सकेगा।

मानवता की निःस्वार्थ सेवा के भाव से उदवाड़ा में 244 निरंकारी भक्तों ने किया रक्तदान

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 30 अगस्त। सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं निरंकारी राजपिता रमित जी के पावन आशीर्वाद से संत निरंकारी मिशन की सामाजिक शाखा उदवाड़ा, परिया एवं धगड़माड़ द्वारा संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वावधान में रविवार 30 अगस्त को उदवाड़ा स्थित संत निरंकारी सत्संग भवन में एक रक्तदान शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन संपन्न हुआ। इस रक्तदान शिविर को निरंकारी भक्तों एवं स्वैच्छिक रक्तदाताओं का उत्साहजनक प्रतिसाद मिला। जिसमें वलसाड रक्तदान केंद्र के सहयोग से 244 यूनिट रक्त का सफलतापूर्वक संग्रह किया गया। संपूर्ण शिविर अत्यंत सुव्यवस्थित एवं अनुशासित वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न किया गया। रक्तदान शिविर का शुभारंभ दक्षिण गुजरात के प्रभारी ओंकार सिंह की उपस्थिति में निरंकार प्रभु के सिमरन द्वारा किया गया। उन्होंने मिशन द्वारा निःस्वार्थ मानव सेवा के प्रति किए जा रहे निरंतर प्रयासों की प्रशंसा करते हुए स्वैच्छिक रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने बताया कि यह मिशन की करुणा, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं मानव सेवा के प्रति समर्पित भावना का प्रतीक रहा है, जबकि संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन देशभर में नियमित रूप से रक्तदान शिविरों का आयोजन करके लोगों को रक्तदान जैसे महान कार्य द्वारा अमूल्य जीवन बचाने के लिए प्रेरित कर रहा है। साथ ही, रक्त नाड़ियों में बहे, नालियों में नहीं के जनकल्याणकारी संदेश को भी समाज तक पहुँचा रहा है। इस शिविर में संत निरंकारी मंडल के वापी सेक्टर संयोजक, सोशल वेलफेयर को-ऑर्डिनेटर, दमण ब्रांच के मुखी तथा अनेक महानुभावों ने उपस्थिति दी थी। यह रक्तदान शिविर उदवाड़ा, परिया एवं धगड़माड़ ब्रांच के मुखियों एवं स्थानीय सेवादल अधिकारी तथा सेवादल भाइयों-बहनों के साथ-साथ संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के स्वयंसेवकों के सहयोग से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

मराठी ब्राह्मण सभा सिलवासा की अनोखी रक्षाबंधन पहल: 108 पर कार्य करनेवाले एम्बुलेंस चालकों एवं स्टाफ का किया सम्मान

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा, 30 अगस्त। हमारे जीवन में अनेक लोग अलग-अलग माध्यमों से हमारी मदद करते हैं। कुछ लोगों की मदद सहज ही हमारे ध्यान में आती है, तो कुछ लोग बिना किसी अपेक्षा के पर्दे के पीछे रहकर अपना कर्तव्य निभाते रहते हैं। ऐसे ही अनदेखे और अनसुने नायकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की एक अनोखी पहल मराठी ब्राह्मण सभा सिलवासा द्वारा रक्षाबंधन के अवसर पर की गई। जीवन और मृत्यु के बीच के कठिन क्षणों में 108 पर उपलब्ध होनेवाली यह एम्बुलेंस केवल एक सेवा नहीं, बल्कि किसी के जीवन की उम्मीद लेकर दौड़ने वाली जीवनवाहिनी होती है। उस एम्बुलेंस के पहिए समय के साथ दौड़ लगाते हैं। मरीज को सुरक्षित और समय पर अस्पताल पहुंचाने के लिए दिन-रात तत्पर रहने वाले एम्बुलेंस चालक एवं उनके साथ कार्यरत स्टाफ वास्तव में किसी देवदूत से कम नहीं हैं। इन्हीं अनसंग हीरोज के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करते हुए मराठी ब्राह्मण सभा के सदस्यों ने उन्हें स्नेह और अपनत्व की राखी बांधी। इस अवसर पर उनके द्वारा समाज के लिए की जा रही निःस्वार्थ सेवा को नमन करते हुए उन्हें सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सभा की ओर से कहा गया कि राखी केवल भाई-बहन के रिश्ते का धागा नहीं है, बल्कि यह कृतज्ञता, मानवता और अपनत्व का भी प्रतीक है। रक्षाबंधन के इस पावन पर्व पर उन लोगों को याद करना आवश्यक है, जो संकट की घड़ी में बिना किसी पहचान या प्रसिद्धि की अपेक्षा के हमारी सहायता के लिए सबसे पहले पहुंचते हैं। मराठी ब्राह्मण सभा सिलवासा हमेशा से समाज में सेवा करने वाले ऐसे अनसुने नायकों को खोजकर उन्हें उचित सम्मान देने का प्रयास करती रही है। इसी भावना के साथ इस वर्ष रक्षाबंधन पर एम्बुलेंस चालकों एवं स्टाफ को राखी बांधकर उनकी निस्वार्थ सेवा को सलाम किया गया। सेवा के इन सच्चे नायकों के सम्मान में बंधी यह राखी, मानवता और कृतज्ञता का एक सुंदर संदेश है। इस कार्यक्रम में विवेक उपासनी, प्रकाश कुलकर्णी, वैशाली काजरेकर, स्वरूपा शहा, सुप्रिया कुलकर्णी, सीमा देशपांडे और प्राची हुलसुरकर ने उपस्थित रहकर एम्बुलेंस चालकों एवं स्टाफ को राखी बांधी।

नेपाल में बाढ़ से फंसे महाराष्ट्र के 143 श्रद्धालुओं की सुरक्षित वापसी, परिवारों ने ली राहत की सांस

मुंबई, (ईएमएस)। नेपाल में आई भीषण बाढ़ और अतिवृष्टि के कारण फंसे महाराष्ट्र के 143 श्रद्धालुओं की सुरक्षित वापसी शुरू हो गई है। इनमें से 106 श्रद्धालु रेल मार्ग से नागपुर के लिए रवाना हो चुके हैं, जबकि कैलाश मानसरोवर यात्रा के दौरान फंसे महाराष्ट्र के 37 श्रद्धालु सुरक्षित मुंबई पहुंच गए हैं। लंबे इंतजार के बाद अपने परिजनों को सुरक्षित देखकर परिवारों ने राहत की सांस ली। कई लोगों की आंखों में खुशी के आंसू भी छलक पड़े। नेपाल में भारी बारिश और बाढ़ के कारण कई इलाकों में सड़क और अन्य यातायात व्यवस्थाएं बुरी तरह प्रभावित हुई थीं। इसका असर धार्मिक यात्राओं पर गए भारतीय श्रद्धालुओं पर भी पड़ा। महाराष्ट्र के कई श्रद्धालु काठमांडू और नेपाल के अन्य इलाकों में फंस गए थे। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए संबंधित प्रशासन और भारतीय अधिकारियों ने नेपाल प्रशासन के साथ समन्वय कर उनकी सुरक्षित वापसी की व्यवस्था शुरू की। नागपुर के 106 श्रद्धालुओं को काठमांडू से बसों के जरिए भारत-नेपाल सीमा तक लाया गया। इसके बाद बिहार प्रशासन की मदद से उन्हें पटना पहुंचाया गया। वहां से विशेष व्यवस्था के तहत श्रद्धालुओं को रेल मार्ग से नागपुर के लिए रवाना किया गया। कुछ श्रद्धालुओं ने दिल्ली के रास्ते हवाई यात्रा का विकल्प भी चुना। दिल्ली पहुंचने के बाद वे आगे रेल मार्ग से नागपुर के लिए रवाना हुए। इस दौरान यात्रा में आने वाली परेशानियों को देखते हुए प्रशासन की ओर से चरणबद्ध तरीके से उनके आवागमन की व्यवस्था की गई।

गुजरात में फिर बदलेगा मौसम का मिजाज: अगले 24 घंटों में कई जिलों में बारिश और गरज-चमक की संभावना

सितंबर की शुरुआत में शुरू हो सकता है बारिश का नया दौर, दूसरे सप्ताह से भारी बारिश के आसार

अहमदाबाद (ईएमएस)। गुजरात में मानसून एक बार फिर सक्रिय होने के संकेत दे रहा है। मौसम विभाग की ताजा भविष्यवाणी के अनुसार, राज्य के विभिन्न हिस्सों में अगले 24 घंटों के दौरान हल्की से मध्यम बारिश और बारिश के छिटपुट दौर देखने को मिल सकते हैं। कई क्षेत्रों में गरज-चमक के साथ बौछारें पड़ने की भी संभावना जताई गई है। पिछले कुछ घंटों के दौरान दक्षिण गुजरात के कुछ इलाकों में बारिश दर्ज की गई, जबकि उत्तर गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ के अधिकांश हिस्सों में मौसम मुख्य रूप से शुष्क बना रहा। हालांकि, आने वाले दिनों में राज्य के मौसम में बदलाव की संभावना है और सितंबर की शुरुआत से बारिश का एक नया दौर शुरू हो सकता है।

मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, गुजरात के उत्तर, दक्षिण और मध्य क्षेत्रों के साथ-साथ सौराष्ट्र-कच्छ के विभिन्न इलाकों में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। कई स्थानों पर गरज-चमक के साथ बारिश के छींटे पड़ने की संभावना है। वहीं सितंबर के दूसरे सप्ताह से राज्य के कुछ हिस्सों में भारी बारिश की संभावना भी व्यक्त की गई है। आज उत्तर और मध्य गुजरात के कई जिलों में मौसम मेहरबान हो सकता है। बनासकांठा, वाव-थराद, पाटण, मेहसाणा, साबरकांठा, गांधीनगर, अरावली, खेड़ा, अहमदाबाद, आणंद, पंचमहल, दाहोद और महिसागर जिलों में अलग-अलग स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश या गरज-चमक के साथ बारिश के छींटे पड़ने की संभावना है।

इन क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर मौसम में अचानक बदलाव देखने को मिल सकता है। बादल छाने और कुछ इलाकों में तेज हवाओं के साथ बारिश की बौछारें पड़ने की संभावना को देखते हुए लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी जा सकती है। दक्षिण गुजरात के वडोदरा और भरूच जिलों में एक-दो स्थानों पर हल्की बारिश होने की संभावना जताई गई है। वहीं छोटा उदेपुर, नर्मदा, सूरत, डांग, तापी, नवसारी और वलसाड सहित दक्षिण गुजरात के अन्य जिलों में भी कई स्थानों पर बारिश का माहौल बन सकता है। दक्षिण गुजरात के कुछ हिस्सों में पिछले कुछ घंटों के दौरान बारिश दर्ज होने के बाद आगामी समय में भी बादलों की आवाजाही और बारिश की गतिविधियां जारी रहने की संभावना है।

सौराष्ट्र और कच्छ के विभिन्न जिलों में भी मौसम में बदलाव देखने को मिल सकता है। सुरेंद्रनगर, राजकोट, जामनगर, पोरबंदर, जूनागढ़, अमरेली, भावनगर, मोरबी, द्वारका, गिर सोमनाथ, बोटाद, कच्छ और दीव में अलग-अलग स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना व्यक्त की गई है। हालांकि इन क्षेत्रों के अधिकांश हिस्सों में हाल के समय में मौसम अपेक्षाकृत शुष्क रहा है, लेकिन आगामी दिनों में बारिश की गतिविधियां बढ़ने से लोगों को गर्मी और उमस से कुछ राहत मिलने की उम्मीद है।

मौसम विभाग की भविष्यवाणी के मुताबिक, सितंबर की शुरुआत में बारिश का नया दौर सक्रिय हो सकता है, जबकि सितंबर के दूसरे सप्ताह से राज्य के कुछ हिस्सों में भारी बारिश की संभावना बन सकती है। ऐसे में किसानों के साथ-साथ आम नागरिकों की नजर आने वाले दिनों के मौसम पर टिकी हुई है। फिलहाल गुजरात के अधिकांश क्षेत्रों में हल्की से मध्यम बारिश और गरज-चमक के साथ बौछारों की संभावना को देखते हुए मौसम में लगातार बदलाव देखने को मिल सकता है। नागरिकों को स्थानीय मौसम की स्थिति पर नजर रखने और आवश्यक सावधानी बरतने की जरूरत है।

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGED MY NAME FROM OLD NAME : KARISHMA ISHWARBHAI PATEL TO **NEW NAME : KARISHMABEN ISHWARBHAI PATEL** AS PER DOCUMENT. ADDRESS : KUMBHARWADI, SCHOOL FALIYA, NAROLI (CT),396235, DADRA & NAGAR HAVELI

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGED MY NAME FROM TRUSHNA BHUPENDRAKUMAR SUTHAR TO **TRUSHNABEN BHUPENDRAKUMAR SUTHAR** AS PER DOCUMENT ADDRESS : B-5, FLAT NO.16, YOGI DARSHAN-1, NEAR BASERA COMPLEX, AMLI, SILVASSA, SILVASSA - 396230

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGED MY NAME FROM PATEL HETALKUMARI JAYANTIBHAI TO **HETAL BHANDARI** AS PER DOCUMENT ADDRESS : SCHOOL FALIYA, KHARADPADA, NAROLI-396235

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGED MY NAME FROM ANIL PATEL TO **PATEL ANILKUMAR BAYAJUBHAI** AS PER DOCUMENT ADDRESS : FLAT NO.302, SHRIRAM-B, MANORATH RESIDENCY, SAYLI ROAD, NR LIONS SCHOOL, SILVASSA-396230

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGED MY NAME FROM BHUSARA PUSHPABEN RAMUBHAI / PUSHPA PATEL TO **PUSHPA ANIL PATEL** AS PER DOCUMENT ADDRESS : FLAT NO.302, SHRIRAM-B, MANORATH RESIDENCY, SAYLI ROAD, NR LIONS SCHOOL, SILVASSA-396230

दुनिया के लिए चिंता का विषय बना अलनीनो

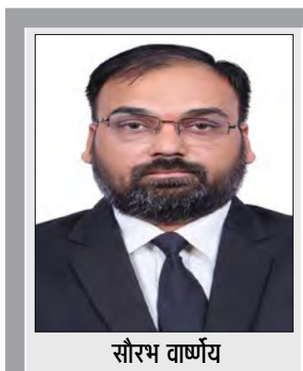

सौरभ वार्ष्णेय

धरती हमें लगातार संकेत दे रही है। कभी रिकॉर्ड गर्मी के रूप में, कभी असामान्य बारिश के रूप में और कभी सूखे तथा बाढ़ के एक साथ बढ़ते खतरे के रूप में। अब आवश्यकता भय पैदा करने की नहीं, बल्कि समय रहते तैयारी करने की है। विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन कायम किए बिना भविष्य सुरक्षित नहीं किया जा सकता।अल नीनो को रोकना हमारे हाथ में नहीं है, लेकिन उसके प्रभावों से होने वाले नुकसान को कम करना निश्चित रूप से हमारे हाथ में है।

धरती का बदलता मिजाज अब केवल वैज्ञानिकों के शोध और मौसम विशेषज्ञों की रिपोर्ट तक सीमित विषय नहीं रह गया है। इसका असर आम आदमी के जीवन से लेकर कृषि, जल संसाधन, अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य तक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। कहीं आसमान से बरसती आग लोगों को बेहाल कर रही है, तो कहीं कुछ ही घंटों में होने वाली मूसलाधार बारिश शहरों को जलमग्न कर रही है। कहीं किसान बारिश का इंतजार करते-करते परेशान हैं, तो कहीं अत्यधिक वर्षा उनकी महीनों की मेहनत को बहा ले जा रही है। मौसम के इस बदलते और असामान्य स्वरूप के बीच अल नीनो एक बार फिर दुनिया के लिए चिंता का विषय बनकर सामने आता है।

अल नीनो प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी हिस्से में समुद्री सतह के तापमान के सामान्य से अधिक गर्म होने से जुड़ी एक प्राकृतिक जलवायु घटना है। इसका प्रभाव केवल प्रशांत महासागर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में तापमान, वर्षा और हवाओं के पैटर्न को प्रभावित कर सकता है। यह घटना प्राकृतिक जलवायु चक्र का हिस्सा है और हजारों वर्षों से पृथ्वी की जलवायु व्यवस्था में इसका अस्तित्व रहा है। लेकिन आज परिस्थितियां पहले जैसी नहीं हैं। मानव गतिविधियों के कारण पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में अल नीनो और बढ़ते वैश्विक तापमान का मेल मौसम की चरम स्थितियों को और अधिक गंभीर बना सकता है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर अल नीनो को लेकर इतनी चिंता क्यों है? इसका उत्तर इसके व्यापक प्रभावों में छिपा है। अल नीनो के दौरान दुनिया के कई हिस्सों में तापमान सामान्य से अधिक बढ़ सकता है, जबकि कुछ क्षेत्रों में वर्षा के स्वरूप में बड़ा बदलाव देखने को मिलता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए यह स्थिति विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। देश की बड़ी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है और आज भी खेती का एक बड़ा हिस्सा मानसूनी बारिश पर आधारित है। यदि बारिश सामान्य से कम होती है या उसका वितरण असमान रहता है, तो इसका सीधा असर खरीफ फसलों पर पड़ सकता है।

धान, मक्का, दालें, तिलहन और अन्य फसलों की पैदावार प्रभावित होने का खतरा बढ़ जाता है। उत्पादन में कमी का असर केवल किसान तक सीमित नहीं रहता। इससे खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ सकती हैं और महंगाई पर दबाव पैदा हो सकता है। पहले से ही महंगाई और रोजगार जैसी

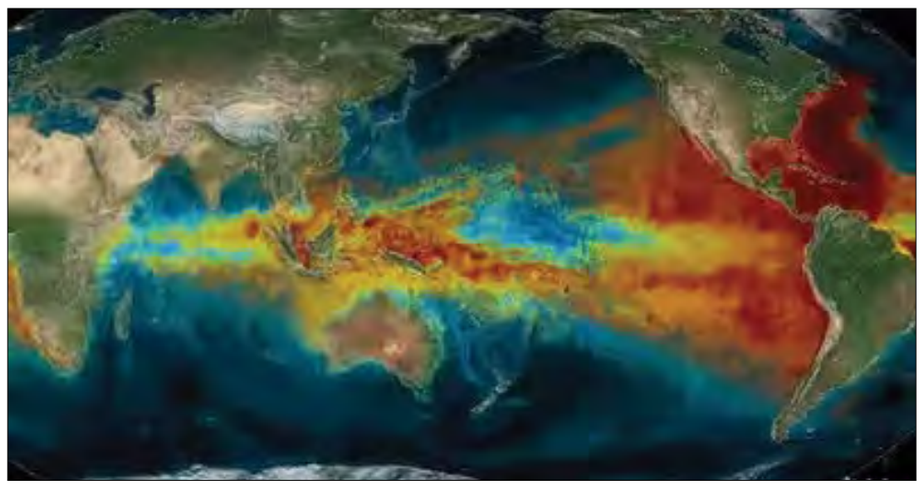

चुनौतियों से जूझ रहे आम परिवारों के लिए खाद्य कीमतों में बढ़ोतरी अतिरिक्त बोझ बन सकती है।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी कम गंभीर नहीं है। जलवायु परिवर्तन के कारण जब वातावरण अधिक गर्म होता है, तो उसमें नमी धारण करने की क्षमता बढ़ती है। परिणामस्वरूप कई बार कम समय में अत्यधिक बारिश होने लगती है। ऐसी बारिश सामान्य मानसून से अलग होती है। कुछ घंटों में इतनी वर्षा हो जाती है कि शहरों की जल निकासी व्यवस्था जवाब दे देती है, नदियां उफान पर आ जाती हैं और पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन का खतरा बढ़ जाता है। यानी एक ओर सूखे जैसी स्थिति और दूसरी ओर अचानक बाढ़–दोनों परिस्थितियां एक ही बदलती जलवायु व्यवस्था का हिस्सा बन सकती हैं।

भारत के लिए यह खतरा इसलिए भी गंभीर है क्योंकि देश की भौगोलिक विविधता बहुत अधिक है। हिमालयी क्षेत्र में भारी बारिश और बादल फटने जैसी घटनाएं जान-माल को नुकसान पहुंचा सकती हैं। मैदानी इलाकों में नदियों का जलस्तर बढ? से बाढ़ की स्थिति पैदा हो सकती है। वहीं महानगरों में कुछ घंटों की तेज बारिश ही यातायात, बिजली, सीवर और जनजीवन को अस्त-व्यस्त करने के लिए पर्याप्त है। ऐसे में यह समझना होगा कि केवल बारिश की कुल मात्रा देखना पर्याप्त नहीं है; **बारिश कब, कितनी तेजी से और किस क्षेत्र में होती है**, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

अल नीनो का असर समुद्री और स्थलीय पारिस्थितिकी पर भी पड़ सकता है। समुद्र का तापमान बढ़ने से समुद्री जीव-जंतुओं और मछली उत्पादन पर असर पड़ सकता है। समुद्र दुनिया की जलवायु प्रणाली का महत्वपूर्ण नियामक है। इसलिए समुद्र के तापमान में होने वाला बदलाव लंबे समय तक वातावरण और मौसम को प्रभावित कर सकता है। यदि समुद्रों का तापमान लगातार बढ़ता रहा तो समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर दबाव और बढ़ेगा।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी बदलता मौसम बड़ी चुनौती बन रहा है। अत्यधिक गर्मी से हीट स्ट्रोक और डिहाइड्रेशन जैसी समस्याएं बढ़ सकती हैं। कमजोर वर्ग, बुजुर्ग, बच्चे और खुले में काम करने वाले श्रमिक सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। दूसरी ओर बाढ़ के बाद जलजनित बीमारियों और मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। इस प्रकार जलवायु परिवर्तन और अल नीनो का प्रभाव केवल मौसम विभाग के आंकड़ों तक सीमित नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य का भी विषय है।

अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। कृषि उत्पादन में कमी, बिजली की मांग में वृद्धि, जल संकट, बाढ़ से बुनियादी ढांचे को नुकसान और स्वास्थ्य संबंधी खर्च–इन सभी का आर्थिक बोझ सरकार और जनता दोनों को उठाना पड़ता है। अत्यधिक गर्मी में बिजली की मांग बढ़ती है, जबकि जल संकट से उद्योग और कृषि दोनों प्रभावित हो सकते हैं। दूसरी ओर बाढ़ और भूस्खलन से सड़कों, पुलों और अन्य सार्वजनिक संपत्तियों को नुकसान पहुंचता है।ऐसे समय में सरकारों की जिम्मेदारी केवल राहत और मुआवजे तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि जलवायु जोखिम को विकास की हर योजना का हिस्सा बनाया जाए। शहरों की जल निकासी व्यवस्था को आधुनिक बनाया जाए, बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में निर्माण पर प्रभावी नियंत्रण हो, जल संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए और किसानों को मौसम आधारित कृषि सलाह समय पर उपलब्ध कराई जाए। सूखा और बाढ़ दोनों से निपटने के लिए स्थानीय स्तर पर अलग-अलग रणनीतियां तैयार करनी होंगी।

कृषि क्षेत्र में भी पारंपरिक सोच से आगे बढड़े की जरूरत है। कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली फसलों, सूखा और गर्मी सहन करने वाली किस्मों, माइक्रो-इरिगेशन तथा वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना होगा। किसानों को मौसम की वास्तविक समय की जानकारी और संभावित जोखिमों के बारे में पहले से चेतावनी मिलनी चाहिए। इससे वे बुवाई, सिंचाई और कटाई से जुड़े निर्णय अधिक वैज्ञानिक ढंग से ले सकेंगे।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अल नीनो को केवल एक अस्थायी प्राकृतिक घटना मानकर उसके खतरे को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अल नीनो आएगा और जाएगा, लेकिन यदि पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता रहा तो ऐसी प्राकृतिक घटनाओं के प्रभाव अधिक जटिल और गंभीर हो सकते हैं। इसलिए वास्तविक चुनौती अल नीनो से अधिक उस बदलती जलवायु व्यवस्था की है, जिसमें अल नीनो अपना प्रभाव डाल रहा है।

धरती हमें लगातार संकेत दे रही है। कभी रिकॉर्ड गर्मी के रूप में, कभी असामान्य बारिश के रूप में और कभी सूखे तथा बाढ़ के एक साथ बढ़ते खतरे के रूप में। अब आवश्यकता भय पैदा करने की नहीं, बल्कि समय रहते तैयारी करने की है। विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन कायम किए बिना भविष्य सुरक्षित नहीं किया जा सकता।अल नीनो को रोकना हमारे हाथ में नहीं है, लेकिन उसके प्रभावों से होने वाले नुकसान को कम करना निश्चित रूप से हमारे हाथ में है। इसके लिए वैज्ञानिक चेतावनियों को गंभीरता से लेना होगा, जलवायु अनुकूल नीतियां बनानी होंगी और प्रकृति के साथ विकास की नई भाषा लिखनी होगी। यदि हमने आज भी चेतावनियों को नजरअंदाज किया, तो आने वाली पीढ़ियों को केवल बदलते मौसम का नहीं, बल्कि बदलती और अधिक असुरक्षित दुनिया का सामना करना पड़ेगा। अब समय है कि धरती के बदलते मिजाज को समझा जाए और उसके संकेतों पर गंभीरता से अमल किया जाए।

संपादकीय

पर्यटन की अधूरी तलाश

पर्यटकों की आमद का एक नक्शा विधानसभा सत्र में उभरा है। पिछले तीन साल में हिमाचल में 7.59 पर्यटक आए जबकि इस दौरान 262824 विदेशी सैलानी भी यहां आए। आंकड़ों की दृष्टि से आबादी से दोगुना पर्यटक आकर्षित करके हिमाचल अपनी संभावनाओं और क्षमता का बेहतरीन प्रदर्शन कर रहा है, लेकिन ह्यक्वालिटी टूरिज्मह्ल के नजरिये से अभी व्याख्या होनी बाकी है। हिमाचल की खूबी यह है कि यहां पर्यटन आगमन के कई कारण हैं, फिर भी हम मार्केटिंग में पीछे हैं। कुछ ऐसे सर्किट हैं जिन्हें हिमाचल ने अहमियत ही नहीं दी। सभी मौसम और सभी कारणों के पर्यटन का संतुलन बहुत जरूरी है ताकि हम हाई एंड टूरिज्म को आमंत्रित कर सकें। बेशक पिछले तीन सालों में दो लाख 65 हजार के करीब विदेशी पर्यटक हिमाचल आए, लेकिन इनके द्वारा खर्च की गई राशि अति उत्तम नहीं। प्रायः बजट टूरिस्ट ही हिमाचल आ रहे हैं। कसोल और धर्मकोट में आ रहे विदेशी पर्यटक कई बार भारतीय सैलानियों से भी कम खर्चीले होते हैं। दूसरी ओर पर्यटकों की बढ़ती तादाद में मंदिरों के दर्शन की रूटीन ही नजर आती है। तीसरे सप्ताहांत पर्यटन की मंजिलें केवल कुछ स्थलों पर ही रहती हैं। चौथे युवा पर्यटकों का आगमन सीमित गतिविधियों के परिप्रेक्ष्य में पूरे हिमाचल का प्रतिनिधत्व नहीं करता है। ऐसे में हिमाचल में पर्यटन की तलाश अधूरी है। यह आंकड़ों की जुबान से भले ही अच्छी लगे, लेकिन गुणवत्ता के आधार पर हिमाचल के संदर्भ अभी खाली हैं। हिमाचल की खोज जिस दिन हाई एंड टूरिस्ट करेगा, उस दिन पर्यटन की आर्थिक भागीदारी बढ़ जाएगी। दूसरी ओर सप्ताहांत पर्यटन के साथ-साथ पूरे हफ्ते या इससे ज्यादा विश्राम का पर्यटन फैले, तो रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। हिमाचल में हाई एंड पर्यटन की जरूरतें अभी समझी ही नहीं गईं। ट्राइबल, सांस्कृतिक एवं धरोहर पर्यटन को महत्त्व मिले, तो विविध आकर्षणों की तरफ विदेशी दौड़े आएंगे। शिमला के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्त्व को देखते हुए सबसे अधिक विदेशी पर्यटक आते हैं, जबकि धर्मशाला, डलहौजी, मकलोडगंज, मनाली व कसौली में विदेशी बजट टूरिस्ट ही आ रहे हैं। हिमाचल में अधिक स्टे के लिहाज से युवा पर्यटक या यूं कहें कि कारपोरेट जगत से जुड़े युवा आ रहे हैं। इनकी जरूरतें हालांकि सीमित हैं, फिर भी इस श्रेणी के पर्यटक ज्यादा दिनों के लिए बार-बार हिमाचल आ रहे हैं। हिमाचल में देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए साहसिक व खेल पर्यटन भी सौगात बन रहा है। अकेले धर्मशाला में ही आईपीएल तथा अन्य क्रिकेट मैचों के जरिए हर साल दो लाख के करीब देशी-विदेशी पर्यटक पहुंच रहे हैं। हाई एंड पर्यटक की तलाश में हिमाचली अधोसंरचना में तेजी से बदलाव आ रहा है, लेकिन महापर्यटन की दृष्टि से कई प्रयास करने होंगे। महामहिम दलाई लामा की उपस्थिति से लाभ उठाते अगर काल चक्र आयोजन के लिए स्थायी सुविधाएं कहीं धर्मशाला-मनाली के बीच विकसित की जाएं, तो यह राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पर्यटन की नई मंजिल हो सकता है। पौंग तथा अन्य कृत्रिम झीलों में साहसिक खेलों तथा अन्य सुविधाओं का विस्तार हो, तो यह पर्यटन के वार्षिक मेलों का प्रसार करेगा।

चिंतन-मनन

दूर करें अध्यात्म विद्या का अभाव

अध्यात्म विद्या के विषय में अधिकांश भौतिक विद्वान शिक्षा को ही विद्या मान बैठते हैं। वे विद्या और शिक्षा के अंतर को भी समझने में असमर्थ हैं जबकि विद्या और शिक्षा में धरती और आसमान का अंतर है। इस विषय को स्पष्ट करते हुए महात्मा परमचेतनानंद ने अपने प्रवचन में कहा कि शिक्षा शब्द शिक्ष धातु से बना है जिसका अर्थ है सीखना। भौतिक शिक्षा अनुकरण के द्वारा सीखी जाती है जिसका संबंध ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेंद्रियों व मन बुद्धि तक सीमित है। इसके अतिरिक्त विद्या शब्द विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना अर्थात् वास्तविक ज्ञान।

यह ज्ञान स्वयं अंदर से प्रकट होता है, इसे ही अध्यात्म ज्ञान कहा जाता है। इसे आत्मा की गहराई में पहुंचने पर ही जाना जाता है। शिक्षा के विद्वान अहंकार से ग्रसित होते हैं, उनमें विनम्रता का अभाव होता है जबकि विद्या का प्रथम गुण विनम्रता है। विद्या वास्तव में मानव की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है।

इस अध्यात्म विद्या से मानव निष्काम कर्म योगी बनता है जो सभी को समान भाव से देखता है। पहले निष्काम कर्म योगी को ही प्रजा अपना राजा चुनती थी। वे अपने पुत्र तथा अन्य प्रजा के साथ समान रूप से न्याय करते थे। आज के असमय में अध्यात्म विद्या का अभाव होने के कारण राजा और प्रजा दोनों ही अशांत हैं फिर भी इसे ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है जबकि अध्यात्म विद्या के वेत्ता तत्वदर्शी संत आज भी मौजूद हैं।

ईरान बनाम अफगानिस्तानः शरिया में महिलाओं की तुलनात्मक स्थिति

तनवीर जाफ़री

इस्लामी जीवन पद्धति और कानूनी व्यवस्था को शरिया कहते हैं। शरिया में इबादत,खान-पान,पहनावा, व्यापार, विवाह, तलाक,विरासत, अपराध और सजा जैसे जीवन के तमाम पहलू शामिल हैं। इसके द्वारा कुरान ,सुन्नत,हदीस ,इज्मा व कयास जैसे पुराने स्थापित नियमों के आधार पर नए जमाने की समस्याओं का हल निकालने का दावा किया जाता है। परन्तु आज के आधुनिक दौर में सऊदी अरब,अफगानिस्तान व ईरान जैसे देशों में जहां शरिया को देश के मुख्य संविधान और आपराधिक कानून के रूप में लागू किया गया है वहीं भारत, पाकिस्तान,मिस्त्र और इंडोनेशिया जैसे देशों में शरिया केवल पर्सनल लॉ विवाह, तलाक , संपत्ति तक ही सीमित है,जबकि इन्हीं देशों में अपराधिक मामलों के लिए देश का धर्मनिरपेक्ष कानून लागू होता है। अफगानिस्तान की तालिबान सरकार व संगठन शरिया के नाम पर अत्यंत रूढ़िवादी और कबीलाई व्याख्या लागू करती है। जबकि पाकिस्तान में भी शरिया कानून पूरी तरह लागू नहीं है, बल्कि वहाँ एक हाइब्रिड या मिश्रित कानूनी प्रणाली काम करती है। जिसमें ब्रिटिश काल के धर्मनिरपेक्ष सामान्य कानून और इस्लामी शरिया कानून दोनों का मिश्रण है। सवाल यह है कि जब इस्लाम धर्म का कलमा एक, कुरआन एक, रसूल एक नमाज,रोजा हज,जकात सब एक तो इस्लामी देशों में ही शरिया कानून की व्याख्या अलग अलग क्यों? और यदि अलग है तो इसमें सही कौन और गलत कौन? और दुनिया किस शरिया व्यवस्था को सही व इस्लामी शरिया के रूप में देखे? इसी सन्दर्भ में केवल ईरान व अफगानिस्तान में लागू शरिया कानून व इसके अंतर्गत दोनों देशों में महिलाओं की स्थिति व उनपर पड़ने वाले प्रभाव का जायजा लेने की कोशिश करते हैं।

अफगानिस्तान में तालिबान शासन के दौरान गत पांच वर्षों में वहां की महिलाओं की स्थिति को लेकर जो रिपोर्ट्स संयुक्त राष्ट्र सहित विभिन्न वैश्विक मानवाधिकार संगठनों द्वारा तैयार की गयी है उसके मुताबिक वहाँ महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय हो चुकी है। रिपोर्ट्स के अनुसार अफगानिस्तान में महिलाओं को सार्वजनिक जीवन से पूरी तरह मिटाने का प्रयास किया जा रहा है। अफगानिस्तान दुनिया का एकमात्र देश है जहां लड़कियों की माध्यमिक और उच्च शिक्षा आधिकारिक रूप से प्रतिबंधित है। यहाँ कक्षा 6 से आगे लड़कियों के स्कूल जाने और महिलाओं के विश्वविद्यालय जाने पर पूरी तरह रोक है। तालिबान ने विश्वविद्यालयों से महिलाओं से जुड़े 18 कोर्स हटा दिए हैं और महिलाओं द्वारा लिखी गई लगभग 140 किताबों को भी प्रतिबंधित कर दिया है। ऐसी ही सख्त पाबंदियों के चलते अब अफगानिस्तान में केवल 7% महिलाएँ ही रोजगार में बची हैं। यहां महिलाओं को गैर-सरकारी संगठनों, सरकारी मंत्रालयों और सार्वजनिक क्षेत्रों में काम करने से रोक दिया गया है। ब्यूटी पार्लर्स को भी पूरी तरह बंद कर दिया गया है, जिससे लाखों महिलाओं की कमाई का जरीया छिन गया। नए तालिबानी कानून और क्रिमिनल कोड वर्ष 2026 में तालिबान के सुप्रीम लीडर हिबतुल्लाह अखुनजादा द्वारा हस्ताक्षरित 90 पन्नों की नई दंड संहिता ने महिलाओं की स्थिति को दासों जैसा बना दिया है। इस नए कानून के तहत पति को अपनी पत्नी या बेटी को शारीरिक सजा देने यानी उसे पीटने की अनुमति है, बशर्ते कि महिला की कोई हड्डी न टूटे या शरीर पर गहरा खुला घाव न दिखाई दे ।

मोबाइल की गिरफ्त में बचपन, सरकार कब बनाएगी डिजिटल नीति?

कांतिलाल मांडोत

स्कुलो के दरवाजे पर मीडिया का पहरा, लेकिन बच्चों के हाथों में सोशल मीडिया की खुली दुनिया...

बचपन कभी किताबों, खेल के मैदान, परिवार की बातचीत और दोस्तों की संगत में गुजरता था। आज वही बचपन मोबाइल की चमकती स्क्रीन में सिमटता जा रहा है। बच्चे घर में मौजूद हैं, लेकिन उनका ध्यान कहीं और है। परिवार सामने बैठा है, मगर संवाद कम होता जा रहा है। किताबें अलमारी में बंद हैं और मोबाइल की स्क्रीन दिन-रात खुली है। यह बदलाव केवल जीवनशैली का परिवर्तन नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ी के मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास से जुड़ा गंभीर सवाल बन चुका है। राजस्थान में विधानसभा में शिक्षा विभाग की ओर से दिए गए जवाब ने इस चिंता को और गहरा कर दिया है। सरकार से पूछा गया था कि जनवरी 2023 से दिसंबर 2025 के बीच विद्यार्थियों को सोशल मीडिया से दूर रखने और पुस्तकों, अखबारों तथा पत्रिकाओं के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए कौन-कौन सी योजनाएं चलाई गईं और उन पर कितना बजट खर्च हुआ। जवाब में बताया गया कि इस संबंध में फिलहाल कोई प्रस्ताव प्रक्रियाधीन या विचाराधीन नहीं है।

यह स्थिति इसलिए चिंताजनक है क्योंकि स्कूलों में मीडिया के प्रवेश को लेकर सख्ती दिखाई जा रही है, लेकिन बच्चों के हाथों में मौजूद उस डिजिटल दुनिया को लेकर ठोस नीति नजर नहीं आती, जहां वे प्रतिदिन घंटों अपना समय बिता रहे हैं। स्कूल के बाहर मोबाइल पर क्या देखा जा रहा है, किससे बातचीत हो रही है, किस तरह की सामग्री बच्चों तक पहुंच रही है और उसका उनके व्यवहार पर क्या असर पड़ रहा है, इन सवालों का जवाब केवल परिवारों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता।

मोबाइल और सोशल मीडिया अपने आप में दुश्मन नहीं हैं। तकनीक शिक्षा, जानकारी और संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है। समस्या तब पैदा होती है जब तकनीक साधन से बढ़कर आदत और फिर निर्भरता बन जाती है। लगातार छोटे-छोटे वीडियो देखने, बार-बार सूचनाएं जांचने और सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया पाने की आदत बच्चे के ध्यान को लगातार भटका सकती है।

बच्चे पढ़ने बैठते हैं तो कुछ ही देर में मोबाइल देखने की इच्छा होती है। किताब का एक पन्ना लंबा लगता है, लेकिन वीडियो की लगातार बदलती तस्वीरें आकर्षित करती रहती हैं। इसका असर धीरे-धीरे पढ़ाई की आदत पर पड़ सकता है। धैर्य से किसी विषय को समझने की क्षमता कमजोर पड़ सकती है और तत्काल मनोरंजन की आदत गहरी हो सकती है। सबसे बड़ी चिंता यह है कि यह परिवर्तन अक्सर परिवार को तब दिखाई देता है जब बच्चे के व्यवहार में स्पष्ट बदलाव आने लगता है। वह छोटी-छोटी बातों पर चिड़चिड़ा होने लगता है, बातचीत से बचता है, परिवार के साथ बैठने में रुचि नहीं दिखाता और मोबाइल हटाने पर असहज या नाराज हो सकता है। हर बच्चे में इसका असर एक जैसा नहीं होता, लेकिन अत्यधिक और अनियंत्रित स्क्रीन इस्तेमाल को सामान्य मान लेना भी उचित नहीं है।

चिड़चिड़ापन केवल व्यवहार नहीं, संकेत भी है।

बच्चे का चिड़चिड़ापन कई कारणों से हो सकता है। पढ़ाई का दबाव, पारिवारिक वातावरण, नींद की कमी, सामाजिक परिस्थितियां और अन्य कारण भी इसमें भूमिका निभा सकते हैं। लेकिन जब मोबाइल और सोशल मीडिया बच्चे की दिनचर्या का केंद्रीय हिस्सा बन जाएं, तब उसके व्यवहार में आए बदलाव पर परिवार और विद्यालय दोनों को ध्यान देना चाहिए। रात देर तक स्क्रीन देखने से नींद की दिनचर्या प्रभावित हो सकती है। नींद पूरी न होने पर अगले दिन थकान, ध्यान की कमी और चिड़चिड़ापन बढ़ सकता है। लगातार आभासी दुनिया में रहने से वास्तविक जीवन की बातचीत और गतिविधियों में रुचि कम हो सकती है। बच्चा दोस्तों और परिवार के बीच होते हुए भी मानसिक रूप से स्क्रीन की दुनिया में मौजूद रह सकता है।

यही वह स्थिति है जहां माता-पिता को केवल मोबाइल छीन लेने के बजाय बच्चे से बातचीत करनी होगी। डांट और डर से समस्या का स्थायी समाधान नहीं होगा। बच्चे को यह समझाना होगा कि मोबाइल जीवन का हिस्सा हो सकता है, जीवन का केंद्र नहीं।

परिवार से दूर होता बचपन

आज कई घरों में एक अजीब दृश्य दिखाई देता है। एक कमरे में पूरा परिवार बैठा है, लेकिन हर व्यक्ति अपनी-अपनी स्क्रीन में व्यस्त है। बच्चे वही सीखते हैं जो वे अपने आसपास देखते हैं। यदि माता-पिता स्वयं हर समय मोबाइल में व्यस्त रहेंगे तो केवल बच्चों से मोबाइल दूर रखने की अपेक्षा करना कठिन होगा।

बचपन को परिवार की बातचीत चाहिए। दादा-दादी की कहानियां चाहिए। माता-पिता का समय चाहिए। दोस्तों के साथ खेलना चाहिए। मैदान में हार-जीत का अनुभव चाहिए। किताबों से कल्पना की दुनिया बनानी चाहिए। कला, संगीत, प्रयोग और रचनात्मक गतिविधियां बच्चे के व्यक्तित्व को विस्तार देती हैं। मोबाइल की स्क्रीन इन अनुभवों का विकल्प नहीं बन सकती।

यदि बचपन का बड़ा हिस्सा आभासी दुनिया में गुजरने लगे तो सामाजिक व्यवहार, संवाद क्षमता और वास्तविक परिस्थितियों से निपटने का अनुभव प्रभावित हो सकता है। आज की सुविधा कल की कमजोरी न बन जाए, इसकी चिंता अभी से करनी होगी।

दुनिया में बढ़ रही सतर्कता

दुनिया के कई देशों में बच्चों और सोशल मीडिया के संबंध को लेकर सरकारें नए नियमों पर काम कर रही हैं। ऑस्ट्रेलिया में कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया इस्तेमाल को लेकर आयु आधारित प्रतिबंध लागू किया गया है। कई यूरोपीय देशों में स्कूलों में मोबाइल इस्तेमाल सीमित करने पर जोर दिया गया है। चीन में नाबालिगों के ऑनलाइन गेम खेलने के समय को नियंत्रित किया गया है। दक्षिण कोरिया में अत्यधिक इंटरनेट और स्मार्टफोन निर्भरता से जुड़ी समस्याओं के लिए परामर्श की व्यवस्था की गई है।

भारत में परिस्थितियां अलग हैं। यहां परिवार, समाज, शिक्षा और संस्कृति की अपनी जटिलताएं हैं। इसलिए किसी दूसरे देश का मॉडल ज्यों का त्यों लागू नहीं किया जा सकता। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि समस्या को अनदेखा किया जाए।

राजस्थान को डिजिटल नीति बनानी होगी।राजस्थान में बच्चों के लिए एक स्पष्ट डिजिटल सुरक्षा नीति की जरूरत है। स्कूलों में स्मार्टफोन मुक्त कक्षाओं पर गंभीरता से विचार किया जा सकता है। साथ ही बच्चों को साइबर सुरक्षा, ऑनलाइन गोपनीयता, साइबर उत्पीड़न, गलत सूचना और जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार की जानकारी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर दी जा सकती है।

शिक्षकों को केवल पढ़ाने तक सीमित रखने के बजाय उन्हें डिजिटल जोखिमों की पहचान के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। जिन बच्चों को तकनीक के अत्यधिक इस्तेमाल से परेशानी हो रही हो, उनके लिए विद्यालय स्तर पर परामर्श की व्यवस्था होनी चाहिए। अभिभावकों को भी डिजिटल पालन-पोषण के बारे में जागरूक किया जाना जरूरी है।

इसके साथ ही स्कूलों में पुस्तकालयों को सक्रिय करना होगा। बच्चों को केवल किताब खरीदने की सलाह देने से पढ़ने की आदत नहीं बनेगी। पुस्तक चर्चा, कहानी लेखन, वाचन, खेल, विज्ञान प्रयोग, कला और परियोजना आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देना होगा। बच्चे को मोबाइल से हटाने के लिए उसके सामने बेहतर विकल्प भी रखने होंगे।

बच्चों को सोशल मीडिया से पूरी तरह काट देना व्यावहारिक समाधान नहीं है। डिजिटल दुनिया से परिचित होना आज की आवश्यकता भी है। सवाल यह है कि बच्चा तकनीक का इस्तेमाल कर रहा है या तकनीक बच्चे के व्यवहार को नियंत्रित कर रही है। सरकार को उम्र के अनुसार स्क्रीन इस्तेमाल, डिजिटल सुरक्षा और ऑनलाइन व्यवहार के स्पष्ट दिशा-निर्देश बनाने चाहिए। विद्यालय, परिवार और समाज को मिलकर जिम्मेदारी निभानी होगी। बच्चों पर पहरा लगाने से अधिक जरूरी है उन्हें डिजिटल दुनिया में सुरक्षित और जिम्मेदार तरीके से चलना सिखाना।

आज मोबाइल हाथ में है, कल यही बच्चे देश का भविष्य संभालेंगे। इसलिए चिंता केवल इस बात की नहीं होनी चाहिए कि बच्चा कितने घंटे मोबाइल चला रहा है। असली सवाल यह है कि मोबाइल उसके समय, सोच, व्यवहार और रिश्तों के साथ क्या कर रहा है।

अगर आज हमने इस बदलाव को केवल आधुनिकता समझकर नजरअंदाज कर दिया तो आने वाले वर्षों में समस्या कहीं अधिक गहरी हो सकती है। सरकार को अब इंतजार करने के बजाय नीति बनानी होगी। स्कूलों को पहल करनी होगी और परिवारों को अपनी भूमिका समझनी होगी।

बच्चे को तकनीक चाहिए, लेकिन उससे ज्यादा उसे बचपन चाहिए। उसे इंटरनेट चाहिए, लेकिन उससे ज्यादा संवाद चाहिए। उसे स्क्रीन चाहिए, लेकिन उससे ज्यादा किताब, खेल का मैदान, परिवार का साथ और समाज से जुड़ाव चाहिए। डिजिटल युग को रोकना संभव नहीं है, लेकिन उसमें बचपन को खोने से बचाना निश्चित रूप से संभव है। यही समय है कि सरकार, शिक्षा व्यवस्था और परिवार मिलकर तय करें कि तकनीक बच्चों का भविष्य बनाएगी या उनका बचपन छीन लेगी।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संक्षिप्त समाचार

9/11 की बरसी पर बदला ट्रंप का प्लान: पेंटागन के कार्यक्रम में होंगे शामिल, कहा- अपनों को याद करने का है दिन

वाशिंगटन, एजेंसी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पेंटागन में 11 सितंबर के हमलों की 25वीं बरसी पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल होंगे। ट्रंप ने शुक्रवार को अपने इस कार्यक्रम की पुष्टि की। व्हाइट हाउस ने बताया कि उपराष्ट्रपति जेडी वेंस न्यूयॉर्क में होने वाले कार्यक्रम में शामिल होंगे। वहीं, प्रशासन के अन्य अधिकारी पेंसिल्वेनिया के शैंक्सविले में आयोजित समारोह में जाएंगे। इस साल अल-कायदा के आतंकवादियों की ओर से हाईजैक किए विमानों से किए गए हमलों को 25 साल पूरे हो रहे हैं। इन हमलों में तीन जगहों पर लगभग 3,000 लोगों की जान गई थी। इसने अमेरिकी विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा को पूरी तरह बदल दिया था। शुक्रवार को ह्यूस्टन की यात्रा से लौटने के बाद, एयर फोर्स वन के पास पत्रकारों ने ट्रंप से पूछा कि वे न्यूयॉर्क में होने वाले समारोह में क्यों शामिल नहीं होंगे? जैसा कि कुछ प्रकाशित रिपोर्टों में कहा गया था। उन्होंने जवाब दिया,क्योंकि मैं पेंटागन जा रहा हूं। सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में, ट्रंप ने 9/11 को पीड़ितों और उनके प्यारे परिवार के सदस्यों को याद करने का दिन बताया। पिछले साल, ट्रंप ने पेंटागन में सालाना समारोह में इस दिन को याद किया। वहां उन्होंने उस दिन की घटनाओं का जिक्र किया, जिसमें हाईजैक किए गए विमानों में सवार यात्रियों की बातचीत के कुछ अंश भी शामिल थे।

डाक से मतदान वाले आदेश पर लगी रोक, प्रशासन ने फैसले के खिलाफ दायर की अपील; जज ने क्या कहा

वाशिंगटन, एजेंसी। डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन ने उस फैसले के खिलाफ अपील की है, जिसमें एक जज ने राष्ट्रपति के आदेश पर रोक लगा दी थी। इस आदेश में डाक के जरिये मतदान को लेकर कुछ नई शर्तें रखी गई थीं। यह मामला ऐसे समय अदालत पहुंचा है, जब मध्यावधि चुनाव के लिए कुछ राज्यों में 4 सितंबर से मतपत्र भेजे जाने हैं। शुक्रवार को इस फैसले के खिलाफ ट्रंप प्रशासन ने अपील दायर की। इससे पहले बोस्टन की संघीय अदालत के जज ने ट्रंप के कार्यकारी आदेश पर अगले दो हफ्तों के लिए रोक लगा दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने पहले प्रक्रिया से जुड़े आधार पर इस योजना को आगे बढ़ने की अनुमति दी थी। लेकिन अदालत ने अभी यह फैसला नहीं किया है कि यह योजना कानूनी है या नहीं। ट्रंप के आदेश के मुताबिक, अमेरिकी डाक सेवा कुछ राज्यों के मतपत्र पहुंचाने से इनकार कर सकती थी। इसके लिए राज्यों को उन मतदाताओं की सूची देनी होगी, जो वोट देने के योग्य हैं। साथ ही मतपत्र भेजने के लिए एक तय तरह के लिफाफे का इस्तेमाल करना होगा। अमेरिकी जिला अदालत की जज इंदिरा तलवानी ने कहा कि राज्यों के पास नए मतपत्र तैयार करने और छापने के लिए पर्याप्त समय या पैसा नहीं है। उन्हें अपनी व्यवस्था में बदलाव करना होगा। साथ ही अधिकारियों को मतदाताओं की जानकारी डाक सेवा पर डालने के लिए प्रशिक्षण भी देना होगा।

ट्रंप को झटका: हश मनी केस की सजा खत्म कराने की कोशिश नाकाम, याचिका खारिज कर जज ने क्या कहा?

अल्बानी, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को एक बार फिर झटका लगा है। वह अपनी हश मनी यानी चुप रहने के लिए पैसे देने से जुड़े मामले में मिली सजा खत्म कराना चाहते थे। लेकिन उनकी कोशिश नाकाम हो गई। शुक्रवार को एक संघीय जज ने ट्रंप की याचिका खारिज कर दी। ट्रंप चाहते थे कि न्यूयॉर्क की राज्य अदालत में चले इस मामले को संघीय अदालत में भेज दिया जाए। इसके बाद मामले को राष्ट्रपति की कानूनी छूट के आधार पर खत्म कर दिया जाए। जज एल्विन के. हेलरस्टीन ने ट्रंप की याचिका खारिज करने का अपना पहले का फैसला बरकरार रखा। उन्होंने कहा कि ट्रंप ने मामला संघीय अदालत में भेजने के लिए जो नए कारण बताए हैं, वे न तो नए हैं और न ही कानून के हिसाब से पर्याप्त हैं। उन्होंने कहा कि ट्रंप यह भी नहीं बता पाए कि उन्होंने मामला संघीय अदालत में भेजने में इतनी देर क्यों की। वह यह भी साबित नहीं कर पाए कि उन्होंने इस मामले में समय पर और पूरी गंभीरता से कार्रवाई की। यह तीसरी बार है, जब हेलरस्टीन ने ट्रंप की कोशिश रोकी है। ट्रंप चाहते थे कि मैनहट्टन की अमेरिकी जिला अदालत इस मामले को न्यूयॉर्क की अदालत से अपने हाथ में ले ले। इसी न्यूयॉर्क अदालत में ट्रंप पर मुकदमा चला था। वहीं उन्हें दोषी भी ठहराया गया था। ट्रंप को मई 2024 में दोषी ठहराया गया था। उस समय वह राष्ट्रपति पद पर नहीं थे। वह अपने पहले और दूसरे कार्यकाल के बीच थे।

नेपाल बाढ़ लाइव: त्रिशुली में रुका बचाव अभियान, अब तक 616 लोगों की मौत; 1900 से ज्यादा लापता

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल में अचानक आई बाढ़ के कारण 579 से अधिक लोगों की मौत हुई है। 1900 से अधिक लोग अब भी लापता हैं। इनमें करीब 30 देशों के नागरिक शामिल हैं। भारत के कई पर्यटकों ने सुरक्षित स्वदेश वापसी के बाद राहत की सांस ली। हालांकि, उन्होंने जलप्रलय और बाढ़ की विभीषिका पर रोंगटे खड़े करने वाले विवरण साझा किए हैं। नेपाल बाढ़ त्रासदी में मरने वालों का आंकड़ा 616 पहुंच गया है। वहीं, लापता लोगों का आंकड़ा भी 2000 से ज्यादा हो गया है। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक, चीनी सरकारी मीडिया ने बताया है कि तिब्बत में भूस्खलन के मलबे के बीच बनी झील में जलस्तर एक बार फिर बढ़ रहा है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि इसकी वजह से एक बार फिर से भूस्खलन या मिट्टी के खिसकने का खतरा लगातार बना हुआ है। वहीं, नेपाल में राहत एवं बचाव कार्य में जुटे खोज दल जीवित बचे लोगों को खोजने के लिए मौसम के अनुकूल सीमित समय का पूरा फायदा उठा रहे हैं। सड़क को दोबारा खोलने के प्रयास भी जारी हैं।

बाढ़ राहत कार्यों में सहायता के लिए नेपाल पहुंचा 11 सदस्यीय भारतीय बचाव दल : अचानक आई बाढ़ में 500 से अधिक लोगों की मौत हो गई और लगभग 2,000 अन्य लापता हो गए। इस बचाव अभियान में स्थानीय अधिकारियों की सहायता के लिए 11 सदस्यीय भारतीय दल शनिवार को नेपाल पहुंचा। भारतीय दूतावास के सूत्रों के अनुसार, चिकित्सा कर्मियों और सुरंग बचाव विशेषज्ञों सहित इस टीम को नेपाल सरकार के अनुरोध पर भेजा गया था। टीम को हिमालयी देश में अचानक आई बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में भेजा जा रहा है, जहां बड़े पैमाने पर बचाव और राहत अभियान चलाए जा रहे हैं। बुधवार को रसुवा और मध्य नेपाल के अन्य हिस्सों में भीषण बाढ़ आई, जिसमें 500 से अधिक लोगों की मौत हो गई और बस्तियों, सड़कों, पुलों और जलविद्युत अवसंरचना को व्यापक क्षति पहुंची। शुक्रवार को नेपाल ने कहा कि वह अपने सुरक्षा बलों की अधिकतम तैनाती को ÷प्राथमिकता÷ देना चाहता है, जो स्थानीय पर्यावरणीय परिस्थितियों और दुर्गम भूभाग से भलीभांति परिचित हैं। हालांकि, विदेश मंत्री शिसिर खनाल ने कहा कि सरकार उन कठिन मामलों में अंतरराष्ट्रीय सहायता लेने के लिए तैयार है, जहां अत्यंत जटिल भौतिक संरचनाओं के लिए विशेष तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है।

मौसम बिगड़ने से रुका राहत और बचाव कार्य : त्रिशुली नदी में भारी बारिश के कारण मौसम की स्थिति बिगड़ने से बचाव अभियान अस्थायी रूप से रोक दिया गया है। जानकारी के अनुसार खराब मौसम के चलते हेलीकॉप्टर उड़ान नहीं भर पा रहे हैं। नदी का जलस्तर लगातार बढ़ने के कारण, आसपास के क्षेत्रों के लोगों को एहतियात के तौर पर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है।

राहत कार्यों में विदेशी मदद लेने को तैयार हुआ नेपाल : नेपाल ने अपना फैसला बदलते हुए बाढ़ राहत कार्यों के लिए विदेशी मदद लेने पर सहमति जताई है। जिन देशों के नागरिक लापता हैं, उन देशों के दबाव के कारण सरकार को अपने फैसले से पीछे हटना पड़ा। अधिकारियों का कहना है कि वे टनल में बचाव कार्य और शवों की पहचान में अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों की मदद लेंगे। भोटेकोशी बाढ़ की कवरेज करने वाले विदेशी पत्रकारों के लिए नेपाल ने नए नियम लागू किए हैं। पत्रकारों को पासपोर्ट और वीजा, अपने संगठन द्वारा जारी पहचान पत्र, वेतन और भत्तों का विवरण आदि जमा करना होगा।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) नेपाल में आई बाढ़ को लेकर अपनी मदद का दायरा बढ़ा रहा है, जिसके तहत तत्काल 150,000 अमेरिकी डॉलर की धनराशि जारी की गई है। आवश्यकता आकलन जारी रहने के साथ-साथ अतिरिक्त संसाधन जारी किए जाने की उम्मीद है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक ने टेड्रोस अधानोम घेब्रेयेसस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में बताया कि आपदा शुरू होने के कुछ ही घंटों के भीतर, डब्ल्यूएचओ ने आपातकालीन आपूर्ति भेजी, जिसमें अंतर-एजेंसी आपातकालीन स्वास्थ्य आपूर्ति भी शामिल थी, जो लगभग 10,000 लोगों को 3 महीने तक आवश्यक सामग्री प्रदान कर सकती है। इसके अलावा, इसमें टेंट, 10,000 मास्क, दस्ताने और हैंड सैनिटाइजर भी शामिल थे। नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ के बीच लापता हुए पश्चिम बंगाल के 39 पर्यटकों में से दो पर्यटकों से संपर्क स्थापित हो गया है, जबकि 37 लोग अब भी लापता हैं।

नॉर्वे के महाराजा हेराल्ड पंचम का निधन, 89 की उम्र में ली आखिरी सांस, पीएम मोदी ने दुख जताया

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी। नॉर्वे के पांचवें महाराजा हेराल्ड का 89 साल की उम्र में निधन हो गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किंग हेराल्ड के निधन पर शोक जताया और उन्हें श्रद्धांजलि दी। शाही महल की ओर से गुरुवार को जानकारी दी गई थी कि किंग की हालत काफी गंभीर है और उनका इलाज ओस्लो के नेशनल हॉस्पिटल में चल रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, ÷नॉर्वे के किंग हेराल्ड पंचम के निधन से मुझे गहरा दुख हुआ। इस साल की शुरुआत में अपनी नॉर्वे यात्रा के दौरान महामहिम से हुई मुलाकात को मैं स्नेहपूर्वक याद करता हूं और राष्ट्र के प्रति उनकी गर्मजोशी और सेवा की गहरी भावना से मैं अत्यंत प्रभावित हुआ था। शाही परिवार और नॉर्वे के लोगों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं।

यूरो न्यूज की ओर से साझा जानकारी के अनुसार, किंग हेराल्ड की बिगड़ती सेहत को लेकर चिंता बढ़ने पर सैकड़ों लोग ओस्लो रॉयल पैलेस के बाहर फूल और मोमबत्तियां लेकर इकट्ठा हुए। यूरोप के सबसे उम्रदराज शासक किंग हेराल्ड 17 अगस्त से हीमोलिटिक एनीमिया के कारण अस्पताल में भर्ती थे। बाद में बैक्टीरियल ब्लडस्ट्रीम इंफेक्शन से उनकी स्थिति और गंभीर हो गई। हालत बिगड़ने पर क्रीन सोन्या और क्राउन प्रिंस हाकोन, जो रीजेंट के तौर पर काम कर रहे हैं, ने अपने

आधिकारिक कार्यक्रम रद्द कर दिए और शाही परिवार के अन्य सदस्यों के साथ नॉर्वे किंग के पास पहुंचे। इस खबर के बाद ओस्लो में लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। सैकड़ों लोग रॉयल पैलेस के बाहर इकट्ठा हुए, जहां उन्होंने फूल रखे, मोमबत्तियां जलाईं और राजा के लिए हाथ से लिखे संदेश और चित्र छोड़े। नॉर्वे के अन्य शहरों में भी इसी तरह लोगों के जुटने की खबरें आईं, जहां लोग राजा के स्वास्थ्य पर आगे की जानकारी का इंतजार कर रहे थे। यूरो न्यूज ने बताया कि तबीयत बिगड़ने के बाद सरकार के वरिष्ठ नेताओं ने भी अपने कार्यक्रमों में बदलाव किया। प्रधानमंत्री जोनास गाहर स्टोरे ने जर्मनी की अपनी नियोजित यात्रा रद्द कर दी और कहा कि वह पूरे देश के साथ राजा और शाही परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हैं। संसद अध्यक्ष मसूद घराहखानी ने भी अपनी विदेश यात्रा बीच में ही रोककर नॉर्वे लौटने का फैसला किया। हेराल्ड 1991 से नॉर्वे के राजा थे और हाल के वर्षों में उन्हें कई स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा है।

ट्रंप के चेहरे जैसी दवा पर नीदरलैंड में अलर्ट; संघर्षविराम के बावजूद गाजा में आईडीएफ के हमले, पांच की मौत

वाशिंगटन, एजेंसी। नीदरलैंड के ट्रिंबोस इंस्टीट्यूट ने ट्रंप के सिर के आकार जैसी दिखने वाली एक्स्टसी गोलियों को लेकर चेतावनी जारी की है। संस्थान ने लोगों से इन गोलियों का इस्तेमाल नहीं करने को कहा है। हाल में ड्रग टेस्टिंग केंद्रों पर ऐसी कई गोलियां पहुंची हैं। इन गोलियों में नाम का खतरनाक रसायन मिला है। इसकी मात्रा काफी अधिक बताई गई है। तुलना में देर से होता है। इससे व्यक्ति को लग सकता है कि गोली ने काम नहीं किया। वह दूसरी गोली ले सकता है। इससे ओवरडोज का खतरा बढ़ जाता है। संस्थान के मुताबिक, ज्यादा मात्रा जानलेवा साबित हो सकती है। हालांकि, अभी ऐसी गोलियों से गंभीर बीमारी या मौत का कोई मामला सामने नहीं आया है। नीदरलैंड में एक्स्टसी का उत्पादन और इस्तेमाल गैरकानूनी है। इससे पहले 2017 में जर्मनी में भी ट्रंप के चेहरे वाली हजारों गोलियां जब्त हुई थीं। संघर्षविराम के बावजूद गाजा में इस्राइली सेना के हमले, पांच की मौत अमेरिका की मध्यस्थता में हुए संघर्षविराम के बावजूद गाजा में इस्राइली सेना के हवाई हमले जारी हैं। शुक्रवार को इन हमलों में पांच लोगों की मौत हुई। स्थानीय अस्पताल अधिकारियों के मुताबिक, खान यूनिस के पास एक घर पर हुए हमले में दो भाइयों समेत तीन लोगों की जान गई। गाजा सिटी में अलग-अलग हमलों में दो अन्य लोगों की मौत हुई। ईरान ने अमेरिकी आर्थिक प्रतिबंधों को 'आर्थिक आतंकवाद' बताया है। दूसरी ओर, फिनलैंड ने को सहायता देने का समझौता आगे नहीं बढ़ाने का फैसला किया है। ब्रिटेन ने गाजा संघर्षविराम निगरानी केंद्र से अपने अधिकारियों को हटाने के किसी भी इस्राइली कदम का विरोध किया है। अमेरिका के एक न्यायाधीश ने रक्षा मुख्यालय पेंटागन की तरफ से एंथ्रोपिक को काली सूची में डालने के फैसले पर रोक लगा दी। कैलिफोर्निया की संघीय अदालत में एंथ्रोपिक के मुकदमे में आरोप लगाया गया है कि रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने अपनी अधिकार-सीमा से बाहर जाकर क्लाउड बनाने वाली कंपनी एंथ्रोपिक को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आपूर्ति श्रृंखला जोखिम करार दिया।

नेपाल बाढ़: विदेश से मदद लेने पर बालेन सरकार का यू-टर्न, लापता लोगों की तलाश में भारत समेत ये देश देंगे साथ

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल सरकार ने भोटेकोशी में आई बाढ़ से प्रभावित इलाकों में अंतरराष्ट्रीय खोज और बचाव टीमों को न आने देने के अपने फैसले को बदल दिया है। यह फैसला उन देशों के राजनयिक दबाव के बाद लिया गया है, जिनके नागरिक इस आपदा के बाद से लापता हैं।

नेपाल सरकार ने पहले क्या फैसला लिया था : सरकार ने बुधवार को कहा था कि नेपाली बचावकर्मी खोज अभियान संभालने में सक्षम हैं। विदेशी बचाव टीमों को अनुमति नहीं दी जाएगी। हालांकि, एक दिन के भीतर ही अधिकारियों ने सुरंग से बचाव कार्य, डीएनए टेस्टिंग और फोरेंसिक जांच जैसे विशेष क्षेत्रों में सीमित अंतरराष्ट्रीय मदद लेने का फैसला किया।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने क्या बताया : सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने द काठमांडू पोस्ट को बताया, अंतरराष्ट्रीय समुदाय की ओर से हम पर भारी दबाव था कि कम से कम खोज और बचाव दलों और कुछ विशेषज्ञों को आने की अनुमति दी जाए, क्योंकि बाढ़ में उनके नागरिक भी लापता हो गए हैं। हम कुछ खास इलाकों में सीमित संख्या में विशेषज्ञों को आने की अनुमति दे रहे हैं।

विदेश मंत्री ने क्या कहा : विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने रॉयटर्स को बताया, चीन के साथ हिमालयी सीमा पर आई विनाशकारी बाढ़ के बाद नेपाल को उन खास और तकनीकी क्षेत्रों में विदेशी मदद की जरूरत है जिनमें उसके पास विशेषज्ञता की कमी है लेकिन खोज और बचाव कार्यों के लिए उसे विदेशी मदद की जरूरत नहीं है।

किन देशों को मिली है मंजूरी : नेपाल के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के आकलन के आधार पर, एक अंतर-मंत्रालयी समन्वय समिति ने भारत, चीन, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण कोरिया से मदद को मंजूरी दी है। इन चार देशों के विशेषज्ञ और तकनीशियन सुरंग से बचाव अभियान, डीएनए टेस्टिंग और फोरेंसिक जांच में मदद करेंगे। राहत सहायता की पेशकश करने वाले कई अन्य देशों ने भी विशेषज्ञ टीमें भेजने की इच्छा जताई है। हालांकि, नेपाल ने ऐसी मांगों को स्वीकार नहीं किया है। काठमांडू में कम से कम दो विदेशी दूतावासों के अधिकारियों ने कहा कि उन्होंने अपने लापता नागरिकों का पता लगाने में मदद के लिए टीमें भेजने का बार-बार अनुरोध किया था, लेकिन उन्हें कोई सकारात्मक जवाब नहीं मिला। इसके साथ ही नेपाल सरकार ने बाढ़ की कवरेज करने वाले घरेलू और विदेशी मीडिया संस्थानों के लिए नए नियम लागू किए हैं। सूचना और संचार मंत्रालय के तहत सूचना प्रशासन और प्रेस शाखा के अनुसार, विदेशी पत्रकारों को अपने पासपोर्ट और वैध वीजा की कॉपी के साथ-साथ अपने मीडिया संस्थान से मिला अपॉइंटमेंट लेटर या एग्रीमेंट जमा करना होगा।

टीम बिना कोई चैंपियन नहीं: जरूरत पर मदद लेना कमजोरी नहीं, मजबूत सहयोगी होने के संकेत; सफल इंसान की पहचान क्या

अल्बानी, एजेंसी। मियामी तट के पास अटलांटिक महासागर की तेज लहरों में 86 वर्षीय मां पानी निगलकर बेहोश हो चुकी थी। फेफड़ों में भरता पानी और थमती सांसें। बेटी ने अपनी पूरी ताकत से हाथ-पैर मारकर मां को खींचने की कोशिश की, लेकिन समंदर की ताकत के आगे उसकी हर कोशिश नाकाम हो रही थी।

जब लगा कि दोनों डूब जाएंगे, तभी बेटी ने अपनी रणनीति बदली। एक हाथ से मां का सिर पानी के ऊपर रखा और दूसरा हाथ हवा में लहराते हुए पूरी ताकत से चीख पड़ी...मदद करो। रेस्क्यू बोट के प्रशिक्षित तैराकों ने तुरंत छलांग लगाई, दोनों को पानी से निकाला और समय पर अस्पताल पहुंचाया। यह दास्तान किसी आम इंसान की नहीं, बल्कि जुनून और दृढ़ संकल्प पर दुनिया की सबसे चर्चित बेस्टसेलर किताब लिखने वाली प्रसिद्ध साइकोलॉजिस्ट डॉ एंजेला डकवर्थ की है। डकवर्थ लिखती हैं, उस दिन मेरी और मां की जान समंदर की लहरों से अकेले लड़ने से नहीं बची, बल्कि सही समय पर मदद की गुहार लगाने से बची।

अकेले जीतने का भ्रम : समाज में थॉमस एडिसन के हजारों प्रयोगों या स्टीव जॉब्स के अकेले दम पर क्रांति लाने की कहानियां गढ़कर लोगों को यह सिखाया जाता है कि हर मुश्किल से अकेले जूझना ही मर्दानगी या असली कामयाबी है।

रिसर्च का निष्कर्ष : दुनिया के शीर्ष सफल लोगों का गहन अध्ययन करने के बाद डकवर्थ कहती हैं, शीर्ष स्तर के सफल लोगों ने अपनी सफलता का श्रेय उन लोगों को दिया जिन्होंने मुश्किल वक्त में उनका हाथ थामा। मदद मांगना कमजोरी नहीं = रिसर्च से साबित हुआ है कि जो लोग सलाह और सहयोग मांगने में संकोच नहीं करते, वे अकेले जूझने वालों के मुकाबले कई गुना ज्यादा तेजी से सीखते हैं।

सबसे बड़े वेल्थ फंड के सीईओ निकोलाई टैंगेन : निकोलाई अपनी लीडरशिप किताब में अपनी निजी खूबियों से ज्यादा अपनी असिस्टेंट ग्रेटे स्टारहाइम की भूमिका को विस्तार से दर्ज करते हैं। निकोलाई कहते हैं, मैं उस पर आंख मूंदकर भरोसा करता हूं। जब वह कहती है कि मैं गलत हूं, तो मैं अपनी गलती मान लेता हूं। क्या यह स्वीकार करने में कोई शर्म है कि हमें दूसरों की मदद की जरूरत है? कोनन ओ%ब्रायन की हार्वर्ड स्पीच = प्रसिद्ध टीवी होस्ट कोनन ओ%ब्रायन ने हार्वर्ड के दीक्षांत समारोह में कहा था, अगर मैं आज उन सभी लोगों को यहां बुला लूं जिन्होंने मुझे इस मुकाम तक पहुंचाने में मदद की है, तो पूरा शहर खचाखच भर जाएगा।

मोहन भागवत ने किया इस्कॉन मंदिर का दौरा, लोगों में उत्साह; विरोध करने वाला यूएससीआईआरएफ क्या बोला

अल्बानी, एजेंसी। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के अमेरिका दौरे के बीच न्यूयॉर्क में उनका 26 सेकंड एवेन्यू जाना चर्चा में रहा। यह वही स्थान है जहां स्वामी प्रभुपाद ने इस्कॉन का पहला मंदिर स्थापित किया था। भागवत ने जरूरतमंद और बेघर लोगों के लिए आयोजित भोजन वितरण कार्यक्रम में भी भाग लिया।

अमेरिका के न्यूयॉर्क में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत के प्रस्तावित कार्यक्रम को लेकर विवाद छिड़ा हुआ है। इस बीच मोहन भागवत ने शुक्रवार को न्यूयॉर्क में 26 सेकंड एवेन्यू का दौरा किया। इसी स्थान पर स्वामी प्रभुपाद ने पहला इस्कॉन मंदिर स्थापित किया था। इस दौरान भागवत ने शहर में बेघर लोगों की मदद के लिए आयोजित भोजन वितरण अभियान में भी हिस्सा लिया। न्यूयॉर्क के 26 सेकंड एवेन्यू पर इस्कॉन की स्थापना के 60 वर्ष पूरे होने के मौके पर समारोह हो रहा है। वहीं, मोहन भागवत की अमेरिका यात्रा को लेकर अमेरिका की विश्व हिंदू परिषद की अध्यक्ष तेजल शाह ने कहा, यह ऐसा आयोजन है, जो बहुलता, विविधता में एकता और पूरे समुदाय के एक साथ आने का संदेश देता है। हम केवल रक्षाबंधन का त्योहार ही नहीं मना रहे हैं, बल्कि यह भी जता रहे हैं कि समुदाय का हर सदस्य एक-दूसरे के साथ किस तरह संबंध रख सकता है।

न्यूयॉर्क में रक्षाबंधन के कार्यक्रम में शामिल होंगे आरएसएस प्रमुख : तेजल शाह ने आगे कहा, इसके नतीजतन हम आने वाले समय में दुनिया को बेहतर जगह बना सकते हैं। संदेश बिल्कुल स्पष्ट है कि आगे आएं, मतभेदों को एक तरफ रखें, मानवता के लिए मिलकर काम करें और बेहतर भविष्य के लिए मिलकर काम करें। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत न्यूयॉर्क में भारतीय समुदाय के लोगों के साथ मुलाकात करेंगे और रक्षाबंधन के एक कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे।

यूएससीआईआरएफ क्यों चाहता है भागवत के साथ बातचीत : लॉस एंजिलिस में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत के साथ खुले संवाद की संभावना पर अमेरिका के अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग के आयुक्त डॉ. आसिफ महमूद ने कहा, अगर ऐसा कोई अवसर मिलता है तो मैं निश्चित रूप से उनके साथ बैठकर बातचीत करने के लिए तैयार हूं। अगर इसकी व्यवस्था की जा सकती है तो हमें उनके साथ बैठकर बातचीत करने और अधिक जागरूकता पैदा करने में खुशी होगी। उन्होंने कहा, हो सकता है कि कुछ आश्वासन और गारंटी हों, जो वे दे सकते हैं और इससे हमारी सोच बदल सकती है।

भारतीय पेशेवरों पर संकट: अमेरिका में नौकरी गई तो 60 दिन की राहत हो सकती है खत्म, प्रस्ताव की समीक्षा पूरी

वॉशिंगटन, एजेंसी। ट्रंप प्रशासन ने एच-1बी और अन्य विदेशी पेशेवरों की नौकरी खत्म होने के बाद मिलने वाली 60 दिन की विवेकाधीन राहत अवधि को समाप्त करने के प्रस्ताव की समीक्षा पूरी कर ली है। इससे हजारों भारतीय कर्मचारियों और उनके परिवारों पर असर पड़ सकता है। अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग ने %विवेकाधीन 60 दिन की राहत अवधि समाप्त करना शीर्षक वाला प्रस्ताव छह अगस्त को व्हाइट हाउस के सूचना और नियामक मामलों के कार्यालय को भेजा था।

आधिकारिक नियामक रिकॉर्ड के अनुसार, प्रस्ताव की समीक्षा 27 अगस्त को पूरी हुई। इसमें कार्रवाई की स्थिति बदलाव के साथ अनुरूप दर्ज की गई है। इसका मतलब है कि प्रस्ताव कुछ बदलावों के साथ व्हाइट हाउस की समीक्षा प्रक्रिया से आगे बढ़ गया है। हालांकि, प्रस्ताव अभी प्रकाशित नहीं हुआ है और इसके पूरे प्रावधान उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए मौजूदा 60 दिन की राहत अवधि फिलहाल लागू है।

समीक्षा पूरी होने के बाद अब आगे क्या होगा : अगले चरण में प्रस्तावित नियम को आम तौर पर संघीय रजिस्टर में प्रकाशित किया जाएगा। इसके बाद लोगों और संगठनों से इस पर सार्वजनिक टिप्पणियां मांगी जाएंगी। गृह सुरक्षा विभाग को इन टिप्पणियों पर विचार करने के बाद अंतिम नियम जारी करना होगा। इसके बाद ही कोई बदलाव प्रभावी हो सकेगा।

इस प्रस्ताव का नियामक सूचना नंबर 1615-एडी22 है और इसे अमेरिकी नागरिकता एवं आव्रजन सेवा द्वारा तैयार किया जा रहा है। नियामक रिकॉर्ड में इसे ऐसा प्रस्तावित नियम बताया गया है, जिसका आर्थिक प्रभाव महत्वपूर्ण नहीं है और इसे लागू करने की कोई कानूनी समयसीमा नहीं है। मौजूदा नियम के तहत पात्र कर्मचारियों को नौकरी खत्म होने के बाद लगातार 60 दिनों तक या उनके अधिकृत प्रवास की अवधि खत्म होने तक, इनमें से जो अवधि कम हो, उतनी राहत मिल सकती है। एच-1बी लाभार्थियों में सबसे ज्यादा भारतीय इस

अवधि में प्रभावित कर्मचारी ऐसे नए नियोक्ता की तलाश कर सकते हैं, जो उन्हें प्रायोजित करने के लिए तैयार हो। वे अपनी आव्रजन स्थिति में बदलाव के लिए आवेदन कर सकते हैं या अमेरिका छोड़ने की तैयारी कर सकते हैं। यह प्रावधान एच-1बी, एल-1, ओ-1 और कई अन्य अस्थायी रोजगार वीजा धारकों पर लागू होता है।

एच-1बी लाभार्थियों में भारतीय नागरिकों की संख्या सबसे अधिक है। ऐसे में अगर प्रशासन इस प्रस्ताव को आगे बढ़ाता है तो भारतीय पेशेवरों के सामने विशेष रूप से अनिश्चितता पैदा हो सकती है। एशियाई अमेरिकी, मूल हवाईवासी और प्रशांत द्वीपवासी मामलों पर राष्ट्रपति की सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य अजय जैन भूटोरिया ने प्रस्तावित बदलाव की आलोचना की। उन्होंने कहा कि मौजूदा राहत अवधि को खत्म करने के बजाय बढ़ाया जाना चाहिए।

भारतीय समुदाय ने की प्रस्तावित बदलावों की आलोचना : भूटोरिया ने कहा, मैं गृह सुरक्षा विभाग की इस प्रस्तावित नीति की कड़ी निंदा करता हूं और इसका विरोध करता हूं। 60 दिन की राहत अवधि खत्म करना अमानवीय और व्यावहारिक रूप से असंभव है। जब किसी उच्च कौशल वाले कर्मचारी को अचानक नौकरी से निकाल दिया जाता है, तब भी 60 दिन का समय बहुत कम था। इस सुरक्षा को पूरी तरह खत्म करने से हजारों कानून का पालन करने वाले लोगों के पास अपनी जिंदगी समेटने के लिए बिल्कुल भी समय नहीं बचेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि अचानक नौकरी खत्म होने के बाद प्रभावित परिवारों के पास अपना घर, बच्चों की पढ़ाई और अन्य निजी मामलों को संभालने के लिए पर्याप्त समय नहीं हो सकता है। भूटोरिया ने कहा कि 2023 में उन्होंने राष्ट्रपति की सलाहकार समिति से राहत अवधि को 60 दिन से बढ़ाकर 180 दिन करने की सिफारिश को सर्वसम्मति से मंजूरी दिलाई थी। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा और इंजीनियरिंग क्षेत्रों में भर्ती प्रक्रिया में अक्सर कई चरणों में साक्षात्कार होते हैं। इसके बाद नए नियोक्ता के पास कर्मचारी की आव्रजन स्थिति स्थानांतरित करने के लिए जरूरी कागजी कार्रवाई भी करनी पड़ती है।

भूटोरिया ने कहा, नौकरी से निकाले गए एच-1बी कर्मचारियों के लिए 60 दिन की राहत अवधि खत्म करना एक बड़ा कदम पीछे जाने जैसा है। जब मैंने मार्च 2023 में राष्ट्रपति की सलाहकार समिति के सामने इस अवधि को बढ़ाकर 180 दिन करने की सिफारिश रखी थी, तो वह कंपनियों में होने वाली भर्ती की वास्तविक स्थिति पर आधारित थी।

फॉर्मूला 1: मौजूदा चैंपियन लैंडो नॉरिस ने मैकलारेन के साथ बढ़ाया करार

नई दिल्ली। मौजूदा फॉर्मूला 1 चैंपियन लैंडो नॉरिस ने मैकलारेन के साथ अपना करार आगे बढ़ाने का फैसला किया है। वह कम से कम 2030 सीजन के आखिर तक ब्रिटिश टीम के लिए रेस करेंगे। इस डील में 2030 के बाद भी कई साल तक जुड़े रहने का विकल्प शामिल है।

2017 में टीम से जुड़े थे नॉरिस

इस करार के बढ़ने से नॉरिस 'पपाया' (मैकलारेन टीम का उपनाम) के साथ एक दशक से ज्यादा समय तक बने रहेंगे। वह 2017 में टेस्ट और डेवलपमेंट ड्राइवर के तौर पर टीम से जुड़े थे और 2019 में उन्हें ग्रिड पर रेस करने का मौका मिला था। एफ1 की रिपोर्ट के अनुसार, नॉरिस ने कहा, मैं बहुत ज्यादा उत्साहित हूं। फॉर्मूला 1 में मेरे करियर की शुरुआत से ही मैकलारेन मेरा घर रहा है और मैं चाहता हूं कि यह आगे भी ऐसा ही बना रहे। हमारे पिछले कुछ साल बहुत अच्छे रहे हैं और मुझे भरोसा है कि हम आगे भी कई बार ऐसी सफलता हासिल कर सकते हैं। इसलिए मैं यहीं बने रहना चाहता हूं। माना जा रहा था कि नॉरिस की पिछली डील 2027 सीजन के आखिर में खत्म हो जाएगी, लेकिन इस नई डील के साथ वह कम से कम 12 साल तक 'पपाया' के लिए रेस करेंगे। मैकलारेन उन्हें एमसीएल39 कार तोहफे में देगी, जिससे उन्होंने रेस की और 2025 का टाइटल जीता। उन्होंने कहा, मुझे पता है कि आने वाले कई वर्षों तक मैं सुरक्षित महसूस करूंगा क्योंकि मेरे पास नौकरी है। मैं वहीं हूं जहां मैं रहना चाहता हूं और उन लोगों के साथ हूं जिनके साथ मैं रहना चाहता हूं और यह बात मुझे सुकून देती है। उन्होंने आगे कहा, मैं अपने काम पर ध्यान दे सकता हूं और एक टीम के तौर पर हम उस काम पर भी ध्यान दे सकते हैं जो हम करना चाहते हैं। लोग अक्सर नतीजों को ही सबसे अहम मानते हैं और 99 प्रतिशत मामलों में वे अहम होते भी हैं, लेकिन मैं कहूंगा कि इसमें कुछ गुंजाइश भी होती है उन लोगों के साथ होने का फायदा भी मिलता है जिनके साथ मैं रहना चाहता हूं और जिनके साथ अपने करियर का सफर तय करने में मुझे मजा आता है।

भारतीय गेंदबाज को मिला काउंटी क्रिकेट का टिकट, सरे के लिए खेलेंगे कश्मीर के स्टार पेसर

नई दिल्ली: जम्मू-कश्मीर के तेज गेंदबाज औकीब नबी इंग्लैंड के काउंटी चैंपियनशिप डिविजन-1 में सरे के लिए थोड़े समय के लिए खेलते नजर आ सकते हैं। नबी को इंग्लैंड जाने का वीजा मिल गया है और वह रविवार को नई दिल्ली से इंग्लैंड के लिए रवाना होने वाले हैं। सब कुछ ठीक रहा तो वह 2 सितंबर से द ओवल में यॉर्कशायर के खिलाफ शुरू होने वाले मुकाबले में सरे का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

रणजी ट्रॉफी में मचाया था तहलका

औकीब नबी ने पिछले रणजी ट्रॉफी सीजन में शानदार प्रदर्शन करते हुए सबसे ज्यादा 60 विकेट हासिल किए थे। उन्होंने 12.56 की औसत से विकेट चटकाकर जम्मू-कश्मीर को पहली बार रणजी ट्रॉफी चैंपियन बनाने में अहम भूमिका निभाई थी। उनके इस प्रदर्शन के बाद उन्हें भारतीय टीम के भविष्य के लिए एक उपयोगी तेज गेंदबाजी विकल्प के तौर पर देखा जा रहा है। नबी हाल ही में श्रीलंका के खिलाफ भारत की 1-0 से टेस्ट सीरीज जीतने वाली टीम का हिस्सा थे, लेकिन उन्हें दोनों टेस्ट मैचों में खेलने का मौका नहीं मिला।

इंग्लैंड में स्विंग गेंदबाजी पर होगी नजर

नबी के काउंटी कार्यकाल का एक अहम उद्देश्य उन्हें इंग्लैंड की तेज गेंदबाजों के अनुकूल परिस्थितियों में खेलने का अनुभव देना है। भारतीय टीम मैनेजमेंट और राष्ट्रीय चयनकर्ता यह भी देखना चाहते हैं कि नबी इंग्लैंड के मौसम और परिस्थितियों में गेंद को कितना स्विंग करा सकते हैं। आगामी टेस्ट दौरे पर न्यूजीलैंड में भी सीम और स्विंग के लिए अनुकूल परिस्थितियां मिलने की उम्मीद है। ऐसे में लाल कूकाबुरा गेंद से नबी का अनुभव उनके लिए काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

सरे के साथ तीन मैच खेलने की संभावना

सरे के लिए नबी का संभावित कार्यकाल 2 सितंबर से शुरू होने वाले यॉर्कशायर के खिलाफ मुकाबले से शुरू हो सकता है। इसके बाद सरे को 8 सितंबर को होव में ससेक्स और 15 सितंबर को द ओवल में ग्लैमरगन के खिलाफ खेलना है। नबी इन मुकाबलों के लिए भी उपलब्ध रह सकते हैं। सरे की मौजूदा टीम में भारत के लेग स्पिनर राहुल चाहर और अनकैप्ड बल्लेबाजी ऑलराउंडर महिपाल लोमरोर भी शामिल हैं।

उथप्पा को आईपीएल से मिले थे 3.2 करोड़: अचानक मिले पैसों से डिप्रेशन में गए थे, बोले- आत्महत्या तक के ख्याल आए

नई दिल्ली, एजेंसी। पूर्व भारतीय क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा ने अपने प्रोफेशनल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म लिंक्डइन पर एक बेहद भावुक पोस्ट शेयर किया है। उन्होंने बताया कि कैसे साल 2008 में मिले उनके पहले 3.2 करोड़ रुपये के आईपीएल कॉन्ट्रैक्ट ने उन्हें मानसिक रूप से पूरी तरह तोड़ दिया था।

उथप्पा ने कहा, 21-22 साल की उम्र में इतनी बड़ी रकम (3.2 करोड़ रुपये) मिली, जो उनकी कई पीढ़ियों ने भी नहीं कमाई थी। उनके आस-पास कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो इतनी बड़ी रकम को संभालने या निवेश करने की सही सलाह दे सके। अचानक मिले इस पैसे ने उनके रिश्तों और फैसलों को बदल दिया। साल 2009 तक आते-आते वे गंभीर अवसाद (क्लिनिकल डिप्रेशन) के शिकार हो गए।

उन्होंने खुलासा किया कि वे साउथ अफ्रीका के एक होटल की 23वीं मंजिल की खिड़की पर बैठकर खुदकुशी करने के विचार से जूझ रहे थे। उस वक्त उनकी करोड़ों की कमाई का कोई मोल नहीं रह गया था। उथप्पा ने आज के युवा एथलीट्स, स्टार्टअप फाउंडर्स और आंत्रप्रेन्योर्स को सीख दी है कि 'पैसा कभी आपकी जीत नहीं होता, बल्कि यह आपकी परीक्षा होता है। उथप्पा ने कहा,मुझे मेरा पहला आईपीएल कॉन्ट्रैक्ट 2008 में मिला था। मैं सिर्फ 21 साल का था। मैंने कभी सपने में भी इतने पैसों की उम्मीद नहीं की थी। 30 साल की उम्र में भी नहीं, 40 में भी नहीं। शायद कभी भी नहीं। आज मैं हर उस युवा खिलाड़ी, आंत्रप्रेन्योर (उद्यमी) या स्टार्टअप फाउंडर को बताना चाहता हूं, जिसे अचानक बड़ी कामयाबी या पैसा मिलता है जब बहुत सारा पैसा आता है, तो बहुत सारे लोग भी आते हैं। आपके दिमाग में दस लाख विचार आते हैं। उन विचारों से लाखों उलझनें पैदा होती हैं। उन उलझनों से आपसी बातचीत में गलतफहमियां होती हैं और यह सब आपको बहुत ही मुश्किल हालातों में लाकर खड़ा कर देते हैं।

अर्जेंटीना की टीम बनी चैंपियन

महिला हॉकी विश्वकप: नौ बार की चैंपियन नीदरलैंड को शूटआउट में हराया

एम्सटेलवीन, एजेंसी। अर्जेंटीना ने शनिवार को रोमांचक फाइनल में सह-मेजबान नीदरलैंड को पेनल्टी शूटआउट में 3-1 से हराकर महिला हॉकी विश्व कप का खिताब अपने नाम कर लिया। निर्धारित समय में दोनों टीमें 1-1 से बराबर रहीं, जिसके बाद मुकाबले का फैसला शूटआउट से हुआ। अर्जेंटीना ने शूटआउट में संयम दिखाते हुए बाजी मार ली और तीसरी बार विश्व चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया।

अर्जेंटीना की ओर से विक्टोरिया ग्रानाटो, ब्रिसा ब्रगेसेर और सोफिया काइरो ने गोल किए। वहीं डियाज जो का प्रयास अमान्य करार दिया गया। नीदरलैंड के लिए केवल वीन मारिन गोल कर सकीं, जबकि पियेन सैंडर्स, फेलिस अलबर्स और मोएस फ्रीके अपने प्रयासों को गोल में नहीं बदल सकीं।

इस जीत के साथ अर्जेंटीना ने पिछली बार की हार का हिसाब भी बराबर कर लिया। पिछले विश्व कप में नीदरलैंड ने अर्जेंटीना को 3-1 से हराकर खिताब जीता था। खास बात यह है कि अर्जेंटीना ने इससे पहले 2002 और 2010 में भी नीदरलैंड को हराकर विश्व कप ट्रॉफी अपने नाम की थी। नौ बार की विश्व चैंपियन नीदरलैंड के पास रिकॉर्ड 10वां खिताब जीतने का मौका था, लेकिन अर्जेंटीना ने उसके अभियान पर विराम लगा दिया। लगातार चौथी बार विश्व कप जीतने का डच टीम का सपना भी टूट गया।

यिब्बी के गोल से नीदरलैंड आगे

वेगनेर स्टेडियम में नारंगी रंग से सराबोर दर्शकों के सामने नीदरलैंड ने मुकाबले की शुरुआत आक्रामक अंदाज में की। शुरुआती 15 मिनट में दोनों टीमों के बीच कड़ा संघर्ष देखने को मिला, लेकिन कोई भी टीम गोल नहीं कर सकी। दूसरे क्वार्टर के आखिरी मिनट में नीदरलैंड को पहला पेनल्टी कॉर्नर मिला। दुनिया की नंबर एक ड्रैग-फ्लिकर मानी जाने वाली यिब्बी यानसेन ने शानदार ड्रैग फ्लिक लगाकर गेंद को गोल में पहुंचा दिया। यह टूर्नामेंट में उनका आठवां गोल था और नीदरलैंड ने 1-0 की बढ़त बना ली।

ग्रानाटो ने दिलाई बराबरी

ब्रेक के बाद अर्जेंटीना ने लगातार दबाव बढ़ाया। उसे कई पेनल्टी कॉर्नर मिले, लेकिन नीदरलैंड की अनुभवी गोलकीपर एन्ने वीनेनडाल ने शानदार बचाव करते हुए अर्जेंटीना को बराबरी करने से रोके रखा। अर्जेंटीना ने हमले जारी रखे और मैच के 54वें मिनट में आखिरकार उसे सफलता मिली। गोरजेलानी की फ्लिक को रोकने की कोशिश में डच गोलकीपर फिसल गईं और गोल के पास मौजूद कप्तान मारिया ग्रानाटो ने रिबाउंड पर गेंद को गोल में डाल दिया। स्कोर 1-1 हो गया।

शूटआउट में डच खिलाड़ियों पर दबाव

इसके बाद दोनों टीमों ने निर्णायक बढ़त हासिल करने की कोशिश की, लेकिन कोई गोल नहीं हुआ। मुकाबला शूटआउट में पहुंचा, जहां अर्जेंटीना के खिलाड़ियों ने बेहतर प्रदर्शन किया। नीदरलैंड की ओर से सिर्फ वीन मारिन सफल रहीं। इसके बाद अर्जेंटीना के गोल और डच खिलाड़ियों के चूके प्रयासों ने मैच का रुख पूरी तरह बदल दिया। अंततः अर्जेंटीना ने 3-1 से शूटआउट जीतकर तीसरी बार विश्व कप ट्रॉफी उठा ली।

साइकिल चलाते दिखे कोच गंभीर, दिया बड़ा संदेश

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने देश में फिटनेस को बढ़ावा देने वाली सरकार की 'फिट इंडिया' पहल की जमकर सराहना की है। रविवार को दिल्ली में आयोजित 'संडे ऑन साइकिल विद रन एंड राइड' कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए गंभीर ने कहा कि फिटनेस को केवल किसी एक दिन या कार्यक्रम तक सीमित नहीं रखना चाहिए। उनके मुताबिक, स्वस्थ और फिट नागरिक ही मजबूत और आत्मनिर्भर भारत की नींव बन सकते हैं।

गौतम गंभीर ने केंद्रीय मंत्री मनसुख एल. मंडाविया और अभिनेत्री मधुरिमा तुली के साथ साइकिलिंग पहल में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को साइकिल चलाने, शारीरिक गतिविधियों में हिस्सा लेने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना था। क्रिकेट के मैदान पर फिटनेस और अनुशासन को बेहद अहम मानने वाले गंभीर ने खुद इस अभियान में शामिल होकर लोगों को सक्रिय जीवनशैली का संदेश दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में फिटनेस प्रेमियों और अन्य लोगों ने भी हिस्सा लिया।

गंभीर ने 'फिट इंडिया' पहल को लेकर कहा कि इसका महत्व किसी एक आयोजन से कहीं ज्यादा है। उन्होंने इसे एक ऐसे अभियान के रूप में देखने की अपील की, जिसे लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। गंभीर ने कहा, 'सरकार की ओर से आयोजित यह फिट इंडिया कार्यक्रम एक शानदार पहल है, क्योंकि मेरा मानना है कि भारत जितना फिट होगा, उतना ही मजबूत होगा और उतना ही अधिक आत्मनिर्भर बनेगा।

छांगटे को 'इंडियन फ़ुटबॉलर ऑफ़ द ईयर 2026' का मिला खिताब

मिज़ोरम के फ़ुटबॉल खिलाड़ी लालियानजुआला छांगटे को साल 2026 का सर्वश्रेष्ठ भारतीय फ़ुटबॉलर चुना गया है। 29 वर्षीय चांगते हाल ही में मुंबई फ़ुटबॉल क्लब से मोहन बागान में शामिल हुए हैं। उन्होंने कल रात भारतीय फ़ुटबॉल के दिग्गज खिलाड़ी बाइचुंग भूटिया से यह सम्?मान मिला है। फ़ुटबॉल प्लेयर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा आयोजित यह पुरस्कार साथी खिलाड़ियों के वोटों के आधार पर तय किया जाता है।

त्रिनबागो नाइटराइडर्स का बड़ा फैसला

ब्रावो की जर्सी नंबर 47 अब कोई नहीं पहन सकेगा

त्रिनिदाद। कैरेबियन क्रिकेट के दिग्गज ऑलराउंडर ड्वेन ब्रावो को त्रिनबागो नाइट राइडर्स ने ऐसा सम्मान दिया है, जो कैरेबियन प्रीमियर लीग के इतिहास में इससे पहले किसी खिलाड़ी को नहीं मिला। फ्रेंचाइजी ने ब्रावो की मशहूर नंबर 47 जर्सी को हमेशा के लिए रिटायर करने का फैसला किया है। टीम ने यह कदम ब्रावो के फ्रेंचाइजी, सीपीएल और त्रिनिदाद एवं टोबैगो क्रिकेट में असाधारण योगदान के सम्मान में उठाया।

पहली बार किसी खिलाड़ी की जर्सी रिटायर

जमैका किंग्समेन के खिलाफ मुकाबले से पहले आयोजित समारोह में नाइट राइडर्स ग्रुप के सीईओ वेंकी मैसूर ने इस फैसले की घोषणा की। इसके साथ ही ब्रावो सीपीएल इतिहास में जर्सी रिटायर होने वाले पहले खिलाड़ी बन गए। मैसूर ने कहा, 'नाइट राइडर्स और सीपीएल में ड्वेन ब्रावो के योगदान को मापना असंभव है। नंबर 47 को रिटायर करना यह सुनिश्चित करने का हमारा तरीका है कि उनकी विरासत हमेशा इस फ्रेंचाइजी का हिस्सा बनी रहे। सीपीएल इतिहास में यह सम्मान पाने वाला उनसे बेहतर खिलाड़ी कोई और नहीं हो सकता।'

पांच बार बने सीपीएल चैंपियन

ब्रावो का सीपीएल करियर खिताबों से भरा रहा है। उन्होंने 2015 के बाद खिलाड़ी के तौर पर कुल पांच सीपीएल खिताब जीते। त्रिनबागो नाइट राइडर्स के कप्तान के रूप में उन्होंने 2017 और 2018 में लगातार दो खिताब दिलाए। इसके बाद 2021 में उन्होंने सेंट किट्स एंड नेविस पैट्रियट्स की कप्तानी करते हुए टीम को सीपीएल चैंपियन बनाया। ब्रावो ने 2013 से 2024 तक सीपीएल में हिस्सा लिया और इस दौरान त्रिनबागो नाइटराइडर्स तथा सेंट किट्स एंड नेविस पैट्रियट्स के लिए कुल 107 मुकाबले खेले।

त्रिनबागो नाइटराइडर्स के मुख्य कोच हैं ब्रावो

खिलाड़ी के तौर पर फ्रेंचाइजी को ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाले ब्रावो अब टीम के मुख्य कोच की भूमिका निभा रहे हैं। यानी मैदान पर उनकी जर्सी भले ही रिटायर हो गई हो, लेकिन टीम के साथ उनका रिश्ता अभी भी कायम है। सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले खिलाड़ियों की सूची में ब्रावो तीसरे स्थान पर हैं। उनसे आगे सुनील नरेन (139 मैच) और इमरान ताहिर (135 मैच) हैं।

पूरन ने बताया 'बिग ब्रदर'

मौजूदा त्रिनबागो नाइटराइडर्स कप्तान निकोलस पूरन ने भी ब्रावो के योगदान को याद किया। फ्रेंचाइजी द्वारा जारी वीडियो में पूरन ने कहा, 'प्रेरणा और आदर्श बनने के लिए धन्यवाद। हम बहुत खुश हैं कि आप हमारे साथ हैं। हमारे बड़े भाई बनने के लिए धन्यवाद। कई मौकों पर पिता की तरह हमारा मार्गदर्शन करने के लिए धन्यवाद। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मेरी जिंदगी में प्रेरणा बनने के लिए धन्यवाद।'

15 साल के वैभव सूर्यवंशी ने दलीप ट्रॉफी में रचा इतिहास

ईशान की जगह मिली टीम की कप्तानी!

नई दिल्ली, एजेंसी। बिहार के समस्तीपुर के रहने वाले 15 साल के युवा खिलाड़ी वैभव सूर्यवंशी रविवार को बेंगलुरु के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में सेंट्रल जोन के खिलाफ दुलीप ट्रॉफी के सेमीफाइनल मैच में ईस्ट जोन के कार्यवाहक कप्तान बनकर इतिहास रच दिया। बाएं हाथ के ओपनिंग बल्लेबाज इस मैच में उप-कप्तान के तौर पर उतरे थे, लेकिन रेगुलर कप्तान ईशान किशन के चोटिल होने के बाद अचानक उन पर कप्तानी सौंपी गई। किशन के मैदान से बाहर जाने के बाद इस युवा खिलाड़ी ने सेंट्रल जोन की पारी के 19वें ओवर में टीम की कमान संभाली।

शुभमन गिल (19 साल, 334 दिन) ने 2019 दिलीप ट्रॉफी के दौरान इंडिया ब्लू की कप्तानी करते हुए इस प्रतियोगिता के इतिहास में सबसे कम उम्र में आधिकारिक तौर पर नियुक्त कप्तान बनने का रिकॉर्ड बनाया था। लेकिन सूर्यवंशी को किशन के चोटिल होने के बाद यह मौका मिला जोकि नियमों के तरह कप्तान के चोटिल होने के बाद उप-कप्तान को मिलने वाली जिम्मेदारी है।

विकेटकीपिंग के दौरान किशन की दाहिनी कलाई पर चोट लगी और टीम के फिजियो ने तुरंत उनका इलाज किया। इसके बाद वे आगे की जांच के लिए मैदान से बाहर चले गए और बाद में हाथ पर पट्टी बंधवाकर लौटे। झारखंड के उनके साथी खिलाड़ी कुमार कुशाग्र ने विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी संभाली। किशन के उपलब्ध न होने पर सूर्यवंशी ने टीम की कप्तानी संभाली, यह सीनियर पुरुष टीम के कप्तान के तौर पर उनका पहला अनुभव था।

यह मौका उन्हें ईस्ट जोन का उप-कप्तान बनाए जाने के कुछ ही हफ्तों बाद मिला जिस पर काफी बहस हुई थी। चयनकर्ताओं ने अपने फैसले का बचाव करते हुए कहा था कि यह कदम टीम की तत्काल जरूरतों को पूरा करने के बजाय उनके लंबे समय के विकास में योगदान देने के लिए उठाया गया था। ईस्ट जोन चयन समिति का हिस्सा रहे झारखंड के चयनकर्ता मनीष वर्धन ने क्रिकइन्फो से कहा था, 'हम सिर्फ वर्तमान के बारे में नहीं सोच रहे हैं।' सूर्यवंशी को यह जिम्मेदारी उनके फर्स्ट-क्लास करियर की शुरुआत में ही मिल गई। सेंट्रल जोन के खिलाफ यह मैच सूर्यवंशी का दूसरा दुलीप ट्रॉफी मैच है। इससे पहले 2024 की शुरुआत में रणजी ट्रॉफी में डेब्यू करने के बाद से वे 9 फर्स्ट-क्लास मैच खेल चुके थे।

सूर्यवंशी का पिछला प्रदर्शन

सेमीफाइनल में उनका खेलना टूर्नामेंट में उनके मिले-जुले पहले अनुभव के बाद हुआ। नॉर्थ ईस्ट जोन के खिलाफ ईस्ट जोन की शुरुआती दौर की जीत के दौरान, सूर्यवंशी अपनी पहली दुलीप ट्रॉफी पारी में सिर्फ आठ रन ही बना पाए थे। हालांकि, बाएं हाथ के इस खिलाड़ी ने गेंदबाजी में अच्छा प्रदर्शन किया और दो विकेट लिए, जिससे ईस्ट जोन ने पारी से जीत हासिल की। उनके कुल मिलाकर फर्स्ट-क्लास बैटिंग के आंकड़े बताते हैं कि वे अभी भी अपने विकास के शुरुआती दौर में हैं।सूर्यवंशी ने 9 मैचों में 16.53 की औसत से 215 रन बनाए हैं, जिसमें एक अर्धशतक शामिल है। सूर्यवंशी ने इस साल की शुरुआत में इंग्लैंड के खिलाफ अपना इंटरनेशनल डेब्यू किया था। यह मौका उन्हें शानदार ढ्वक्रसीजन के बाद मिला जिसमें उन्होंने राजस्थान रॉयल्स के लिए 776 रन बनाए थे। इसके बाद जिम्बाब्वे के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज में 200 से ज्यादा रन बनाने के कारण उन्हें 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' चुना गया।

मेरी जिंदगी में अगर म्यूजिक नहीं, तो उसका कोई मतलब नहीं है

मशहूर कंपोजर अखिल सचदेवा ने हाल ही में इमरान हाशमी की फिल्म 'आवारापन 2' का गाना 'पिया घर आया – होमकमिंग' बनाया है। कंपोजर ने बातचीत में बताया कि उन्हें ज्यादा देर तक सोना नहीं पसंद है बल्कि, वे अगले दिन उठने के बाद काम करने का इंतजार करता हैं। कंपोजर ने आईएएनएस के साथ बातचीत में काम के प्रति दिवानगी को लेकर कुछ दिलचस्प बातें शेयर कीं। उन्होंने कहा, 'सच कहूं, तो मैं सांस बाद में लेता हूं और म्यूजिक के बारे में पहले सोचता हूं। मुझे रात में सोना पसंद नहीं है। मैं हमेशा यही सोचता रहता हूं कि कल मैं क्या प्रैक्टिस करूंगा और कल क्या नया बनाऊंगा? अगर जिंदगी में म्यूजिक नहीं है, तो मेरे लिए जिंदगी का कोई मतलब ही नहीं है और गीता में लिखा है कि अगर तुम्हें सरगम आती है, तो श्री राम कहने की भी जरूरत नहीं है। श्रीराम 'सा' में मौजूद हैं, म्यूजिक दुनिया जीत लेता है, म्यूजिक एक अलग ही दुनिया है।' कंपोजर अपनी मां से गहरा जुड़ाव रखते हैं, उन्होंने मां, के प्रति भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि वे हर जन्म में वही मां चाहेंगे, जो उन्हें इस जन्म में मिली हैं। उन्होंने कहा, 'दुनिया अलग है और मैं हर जन्म में यही मांगूंगा कि हर जन्म में मुझे वही मां मिले, जो इस जन्म में मिली हैं। वही चेहरा, शरीर, उतनी ही मोटी होनी चाहिए जितनी वो थीं और उतनी ही खूबसूरत होनी चाहिए जितनी वो हैं, लेकिन वो मुझे इतनी जल्दी छोड़कर न जाए।' म्यूजिक कंपोजर अखिल सचदेवा अक्सर पॉडकास्ट और बातचीत में अपनी मां के प्रति अपना गहरा प्रेम और जुड़ाव व्यक्त करते रहते हैं। हालांकि, उनकी मां के बारे में अधिक जानकारी कभी सामने नहीं आई। 'आवारापन 2' एक एक्शन थ्रिलर फिल्म है, जो 14 अगस्त 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है। यह साल 2007 में आई इमरान हाशमी की चर्चित फिल्म 'आवारापन' का सीक्वल है। इस फिल्म का निर्देशन नितिन कक्कड़ ने किया है। 'आवारापन' रिलीज के वक्त फ्लॉप मानी गई थी, लेकिन बाद के सालों में फिल्म को जबरदस्त फैन फॉलोइंग मिली और आखिरकार अपने म्यूजिक और इमरान हाशमी की एक्टिंग की वजह से इसे कल्ट का दर्जा मिल गया। 'आवारापन 2' इस वक्त सिनेमाघरों में चल रही है।

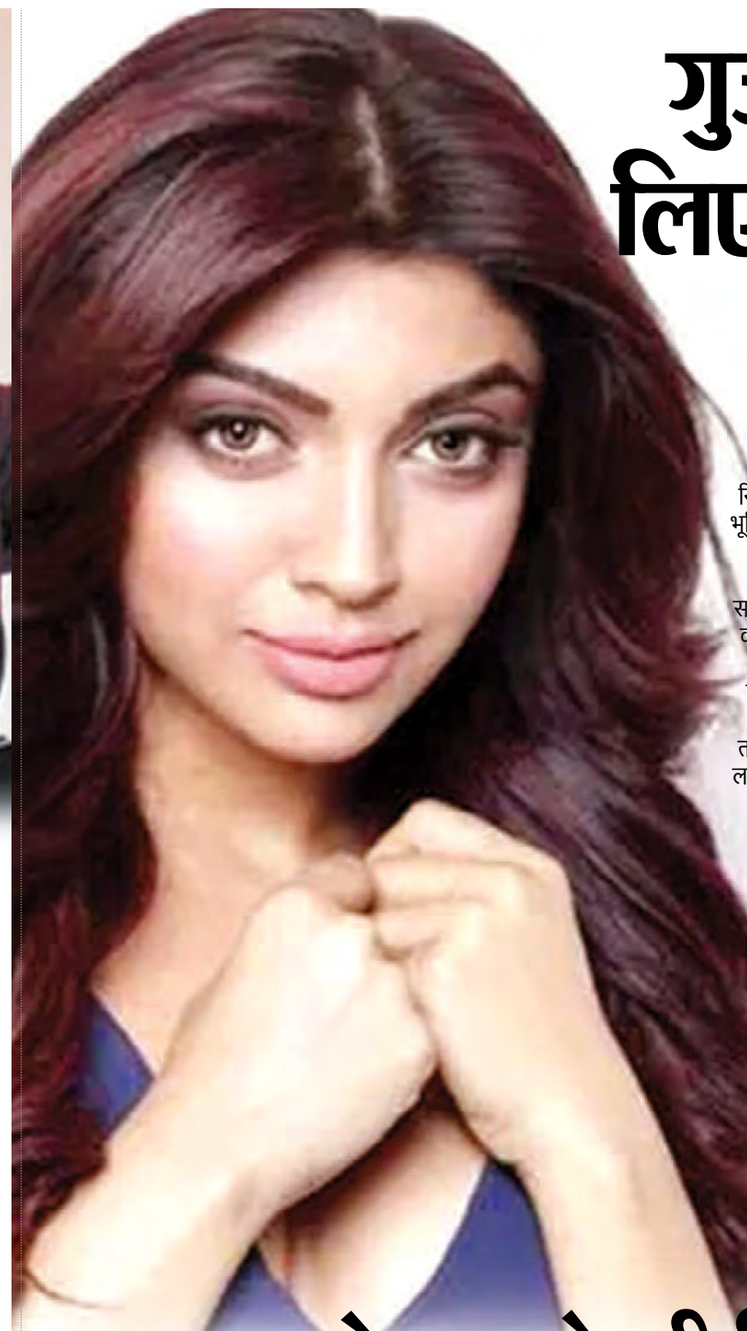

गुजराती फिल्म के लिए अकांक्षा पुरी ने सीखी गुजराती

अभिनेत्री अकांक्षा पुरी जल्द ही गुजराती फिल्म में खास भूमिका निभाती हुई नजर आने वाली हैं। इस भूमिका के लिए उन्होंने गुजराती भाषा सीखने के साथ-साथ वहां की संस्कृति और बोलने के अंदाज को समझने की कोशिश की है। आकांक्षा का कहना है कि जब कोई कलाकार किसी नई भाषा और संस्कृति का हिस्सा बनता है, तो उसे उस माहौल को सही तरीके से समझना चाहिए, तभी पर्दे पर उसका काम स्वाभाविक लगेगा। बातचीत में अकांक्षा ने बताया कि वह अपनी खास भूमिका में गुजराती रंग को सही तरीके से दिखाना चाहती थीं। इसलिए उन्होंने खुद भाषा और वहां के बोलने के तरीके को समझने की कोशिश की। अकांक्षा ने कहा, ''मैं गुजराती रंग को सही तरीके से दिखाना चाहती थी और सिर्फ वही नहीं करना चाहती थी, जो मुझे बताया गया था। मुझे लगता है कि जब आप किसी नई भाषा और संस्कृति में कदम रखते हैं तो उसे ठीक से समझने की कोशिश करनी चाहिए।'' अभिनेत्री ने कहा, ''मैंने भूमिका की तैयारी के दौरान गुजराती भाषा के उच्चारण और बोलने के अंदाज पर खास ध्यान दिया। मैंने शब्दों को सही तरीके से बोलने के साथ-साथ चेहरे के एक्सप्रेशन और बोलने के तरीके को भी समझने की कोशिश की। सच कहूं तो यह पूरा अनुभव काफी मजेदार रहा। मैं चाहती थी कि पर्दे पर मेरा रूप और मेरा किरदार वहां के माहौल का स्वाभाविक हिस्सा लगे।'' आगामी गुजराती फिल्म में अकांक्षा की खास मौजूदगी को लेकर फिलहाल ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है। फिल्म में उनका किरदार क्या होगा और कहानी में उनकी भूमिका कितनी बड़ी होगी, इसे फिलहाल सीक्रेट रखा गया है। हाल ही में अकांक्षा पुरी अभिनेता रणदीप हुड्डा के साथ फिल्म 'इंस्पेक्टर अविनाश 2' में नजर आई थीं। इसमें उन्होंने पंजाबी लड़की का किरदार निभाया था, जो एक डांसर से मुखबिर बन जाती है। यह भूमिका भी उनके लिए काफी अलग थी। अकांक्षा ने इस किरदार को कुछ नया करने का मौका बताया था।

ट्रोलिंग को सफलता की कहानी का हिस्सा मानती हूं

'कैसी ये यारियां' से घर-घर में पहचान बनाने वाली अभिनेत्री नीति टेलर हाल ही में रियलिटी शो 'एलायंस' में नजर आई थीं। इस शो में उनके सफर के दौरान जहां कई भावुक पल देखने को मिले, वहीं कुछ रिश्तों ने भी खूब ध्यान खींचा। शो से जुड़े अनुभवों और अपनी निजी सोच को लेकर नीति ने आईएएनएस से खास बातचीत की। इस दौरान उन्होंने ऑनलाइन ट्रोलिंग को लेकर भी अपनी राय रखी और बताया कि समय के साथ इस मामले में उनका नजरिया काफी बदल गया है।

नीति ने कहा, ''अब मैं सोशल मीडिया पर होने वाली ट्रोलिंग को पहले की तरह दिल पर नहीं लेतीं। ट्रोल होने के पीछे एक मैसेज होता है कि लोग आपको देख रहे हैं और आपके बारे में बात कर रहे हैं। मैंने अब नकारात्मक टिप्पणियों पर ध्यान देने के बजाय अपने काम और उन लोगों पर फोकस करना शुरू कर दिया है, जो सपोर्ट करते हैं।'' ट्रोलिंग को लेकर अपने अनुभव साझा करते हुए नीति ने कहा, ''ये सिर्फ कंप्यूटर और फोन के पीछे छिपे चेहरे हैं, जिन्हें दूसरों को खुश देखना पसंद नहीं है, क्योंकि उनकी अपनी जिंदगी ठीक नहीं चल रही होती। ऐसे लोगों की बातों को अपने ऊपर हावी होने देना सही नहीं है। अगर आप पब्लिक फिगर है, तो आपकी लाइफ में इस तरह की चीजों का होना एक तरह से सामान्य बात है और हर कमेंट का जवाब देना जरूरी नहीं होता।'' नीति ने ट्रोलिंग को सफलता से भी जोड़कर देखा। उन्होंने कहा, ''मुझे यह भी लगता है कि ट्रोलिंग आपकी सफलता की कहानी का एक हिस्सा है। जब लोग आपके बारे में बात करते हैं और आपकी मौजूदगी पर प्रतिक्रिया देते हैं, तो इसका मतलब यह भी हो सकता है कि आप लोगों की नजर में हैं। इसलिए अब मैं ट्रोलिंग को लेकर ज्यादा परेशान नहीं होती और इसे अपनी जिंदगी का एक हिस्सा मानकर आगे बढ़ती हूं।'' बात अगर 'एलायंस' में उनके सफर की करें, तो उन्हें कई भावनात्मक उतार-चढ़ाव से गुजरना पड़ा, लेकिन इसी दौरान दोस्त भी बने, जिनकी शुरुआत की उम्मीद शायद किसी ने नहीं की थी। इनमें सबसे ज्यादा चर्चा नीति और अभिनेता कुशाल टंडन की दोस्ती की हुई।

1000 करोड़ रुपये की फिल्म सम्मान की गारंटी नहीं देती

अभिनेत्री सैयामी खेर अपनी अपकमिंग फिल्म 'हैवान' को लेकर चर्चा में हैं। इस बीच उन्होंने अपनी फिल्म 'घूमर' और '8 एएम मेट्रो' के परफॉर्मेंस को लेकर बात की है। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि किसी कलाकार की काबिलियत को हमेशा फिल्म की कमाई से नहीं मापा जा सकता।

सम्मान को लेकर बोलीं सैयामी

बातचीत में अभिनेत्री ने कहा कि बॉक्स ऑफिस कलेक्शन यह नहीं दिखाता कि किसी कलाकार को दर्शकों से कितना सम्मान मिलता है। अभिनेत्री का कहना है कि 1000 करोड़ रुपये की फिल्म सम्मान की गारंटी नहीं देती। उन्होंने कहा कि मैं '8 एएम मेट्रो' जैसी फिल्म करके संतुष्ट हूं। यह यूट्यूब पर बड़ी हिट हुई और बाद में एक ओटीटी प्लेटफॉर्म ने इसे खरीद लिया। जब तक वह यूट्यूब पर बड़ी हिट नहीं हुई, तब तक कोई उसे खरीद नहीं रहा था। मुझे लगता है कि '8 एएम मेट्रो' से मुझे जो सम्मान मिला है, वह मुझे किसी और फिल्म से नहीं मिला।

बॉक्स ऑफिस पर कामयाबी को लेकर बोलीं अभिनेत्री

कलाकार के भविष्य के मौकों को बॉक्स ऑफिस परफॉर्मेंस से जोड़ने की आदत के बारे में सैयामी ने कहा 'मुझे लगता है कि बॉलीवुड में बॉक्स ऑफिस के बारे में बहुत बात होती है। आपकी अगली फिल्म इस बात पर निर्भर करती है कि उसने कितना पैसा कमाया है, जो दुखद है। यह काबिलियत पर कम और इस बात पर ज्यादा निर्भर करता है कि आपकी फिल्म कितना पैसा कमाती है। हालांकि यह एक कारोबार है। अगर आपकी फिल्म फायदेमंद नहीं है, तो निर्माता फिल्म कैसे बनाएंगे? इसलिए मैं बॉक्स ऑफिस की सफलता का महत्व समझती हूं।

खेर ने की मेकर्स के तारीफ

खेर ने उन फिल्ममेकर्स से मिले सम्मान के बारे में भी बात की जिन्होंने मार्केट के दबाव के बावजूद उनके साथ काम करने का फैसला किया। उन्होंने कहा ''घूमर' को कोई भी बड़ा स्टार मिल सकता था, लेकिन आर. बाल्की सर ने कहा 'तुम इस स्क्रिप्ट के लिए सबसे सही इंसान हो। अगर मैं किसी और को लेता हूं तो स्क्रिप्ट के साथ नाइंसाफी होगी।' जब बड़े मेकर्स कुछ प्रोजेक्ट्स में मेरा साथ देते हैं और कहते हैं कि हम इस प्रोजेक्ट में तुम्हारे अलावा किसी और को नहीं देखते, तो मुझे एक तरह का सम्मान महसूस होता है।

सैयामी खेर का वर्कफ्रंट

अगर काम की बात करें तो सैयामी खेर अगली बार प्रियदर्शन की फिल्म 'हैवान' में नजर आएंगी। इसमें अक्षय कुमार और सैफ अली खान भी हैं। यह फिल्म अगले महीने सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

मैं शो में सबसे छोटी, अली फजल मेरी बहुत टांग खींचते हैं

'मिर्जापुर' की डिंपी का रोल निभाने वालीं हर्षिता गौर ने भले बीटेक इंजिनियरिंग की पढ़ाई की लेकिन उनका सपना कहीं न कहीं एक्ट्रेस बनने का था। उन्होंने कहा- मेरी मां डॉक्टर हैं और अपने कॉलेज डेज में 9 साल तक उन्होंने भी थिएटर किया। इन दिनों वे चर्चा में हैं अपनी अगली फिल्म मिर्जापुर द मूवी से।

बीटेक इंजिनियरिंग की पढ़ाई करने वाली हर्षिता गौर हमेशा से अभिनेत्री बनना चाहती थीं, मगर साथ ही उन्हें अपने परिवार को मायूस नहीं करना था, यही वजह थी कि उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। किस्मत ने उनका साथ दिया और 'साहूा हक' जैसे टीवी शोज से एक्टिंग की उनकी राह आसान हो गई, मगर 'मिर्जापुर' की डिंपी जैसे शांत और सौम्य रोल ने उन्हें रातों -रात मशहूर कर दिया। इन दिनों वे चर्चा में हैं अपनी आगामी फिल्म मिर्जापुर द मूवी से। उनसे खास बातचीत।

'इंजिनियरिंग कर रही थी, मगर एक्ट्रेस बनना था'

एक्टिंग में आने से पहलेहर्षिता इंजिनियरिंग कर रही थीं।

किसिंग सीन पर घरवालों ने आपत्ति नहीं की

अपने पहले ही शो 'साहूा हक' में हर्षिता ने किसिंग सीन्स किए थे। अपने परिवार वालों की प्रतिक्रिया के बारे में वे कहती हैं, 'मेरे परिवार ने कोई आपत्ति नहीं जताई। हालांकि हम मिडिल क्लास वैल्यूज रखते हैं, मगर साथ ही वे ओपन-माइंडेड भी हैं। मेरे कहने का यह तात्पर्य है कि उनका ये हमेशा से मानना है कि तुम परदे पर जो कर रही हो, वो वैल्यू करना चाहिए। मतलब आपको किसिंग सीन करना है या कोई और इंटीमेट दृश्य, अगर वो आपके काम को वैल्यू दे रहे हैं, रिक्वायरमेंट है, अच्छे, क्रिएटिव और क्राफ्ट को समझने वाले लोगों के साथ कर रहे हैं, तो फिर कोई समस्या नहीं है। उन्होंने हमेशा ये समझा कि ये कहानी की मांग थी।'

कथक का साथ कभी नहीं छोड़ सकती

कथक को अपना पहला प्यार मानने वाली हर्षिता कहती हैं, 'मेरे लिए कथक बहुत खूबसूरत चीज है और मुझे बेहद पसंद है। मैंने छह साल की उम्र से कथक सीखा, लेकिन पढ़ाई और बाद में मुंबई आने के दौरान इसमें कई लंबे ब्रेक आए। मुंबई में जब मैंने दोबारा शुरू किया तो एक एक्सीडेंट के बाद दोनों घुटनों में इंजरी हो गई और करीब 4-5 महीने बेड रेस्ट पर रही।

उसी दौरान मिर्जापुर का एक्शन सीक्वेंस भी शूट करना था, जो काफी मुश्किल था। मिर्जापुर द मूवी की वजह से मुझे दोबारा कथक शुरू करने की हिम्मत मिली। अब मुझे लगता है कि कथक मेरी बॉडी में है। मैं इसका साथ नहीं छोड़ूंगी।'

अली मेरी खूब टांग खींचता है

'मिर्जापुर' में हर्षिता अका डिंपी गुड्डू उर्फ अली फजल की बहन बनी हैं। अली के साथ अपनी बॉन्डिंग के बारे में वे कहती हैं, 'सीरीज की तरह वे रियल लाइफ में भी काफी केयरिंग हैं। हमारा मस्ती-मजाक वाला रिश्ता है। वे मेरी बहुत टांग खींचते हैं। मैं शो में सबसे छोटी हूं। जब आई थी, सबसे छोटी थी, अभी भी सबसे छोटी हूं, तो सभी मेरा बच्चे की तरह ख़याल रखते हैं।

मैंने मिर्जापुर के लिए मना कर दिया था

डिंपी पंडित का जो किरदार हर्षिता के करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हुआ, उसके लिए उन्होंने पहले मना कर दिया था। वे बताती हैं, 'मैंने एक टीवी शो किया था साहूा हक, उसमें हमारे मिर्जापुर के निर्देशक गुरमीत असिस्टेंट डायरेक्टर हुआ करते थे। उन्होंने मुझे मिर्जापुर के सीजन वन के लिए डिंपी पंडित की भूमिका का ऑफर दिया। उस वक्त तक हम ओटीटी क्या होता है, जानते नहीं थे। मैंने रोल के लिए मना कर दिया था, क्योंकि आपकी लिमिटेड अंडरस्टैंडिंग होती है। मुझे कहा गया कि दो भाइयों की बहन का रोल है और मैंने उसे नकार दिया, लेकिन फिर उनका दोबारा कॉल आया। मैं जब दूसरी बार मिली, तो मुझे वो सीन नरेट किया गया, जहां मुन्ना (दिव्येंदु शर्मा) के अटैक करने पर डिंपी बोलती है, गाड़ी रोक वरना ठोक देंगे। उस बार मुझे पूरा माहौल और किरदार जम गया और मैंने हां कर दी। आज मिर्जापुर के तीन सीजन के बाद जब मिर्जापुर द मूवी आ रही है, तो लगता है कि अगर मैंने डिंपी के लिए मना कर दिया होता, तो ये मेरे करियर की सबसे बड़ी बेवकूफी होती।

दादरा नगर हवेली और दमण-दीव के शिक्षा विभाग में बड़ा प्रशासनिक फेरबदल:16 अधिकारियों और शिक्षकों को सौंपी नई जिम्मेदारियां

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा/दमण, 30 अगस्त। संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव के शिक्षा निदेशालय ने प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ और अधिक प्रभावी बनाने के लिए विभाग में एक बड़ा फेरबदल किया है। शिक्षा निदेशालय द्वारा 29 अगस्त 2026 को जारी एक आधिकारिक आदेश के तहत प्रदेश के 16 वरिष्ठ अधिकारियों और शिक्षकों के कार्यभार में तत्काल प्रभाव से बदलाव करते हुए उन्हें नई जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। शिक्षा निदेशक और समग्र शिक्षा की राज्य परियोजना निदेशक महिमा तोमर द्वारा जारी इस आदेश का मुख्य उद्देश्य सरकारी योजनाओं का सुचारू क्रियान्वयन, निविदा प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और शैक्षणिक गतिविधियों की निगरानी को और अधिक मजबूत करना है। इस प्रशासनिक पुनर्गठन के तहत उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक दिलावर दाउदे को दादरा नगर हवेली का सहायक शिक्षा निदेशक और कार्यालय प्रमुख नियुक्त किया गया है, जो मुख्य रूप से अनुदान प्राप्त स्कूलों, पीपीपी स्कूलों और छात्रावासों से जुड़े प्रस्तावों की देखरेख करेंगे। हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक राजेश जे. हलपति को दमण का जिला शिक्षा अधिकारी और शिक्षा निदेशालय (संघ प्रदेश थ्रीडी) का सहायक शिक्षा निदेशक (एडमिन) बनाया गया है। उन्हें स्कूली शिक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण टेंडरों, जैसे कि यूनिफॉर्म, जूते, किताबें और साइकिल की खरीद की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसके साथ ही स्नातकोत्तर शिक्षक (पीजीटी) राजेश सिंह को दीव का जिला शिक्षा अधिकारी जिला पंचायत का शिक्षा अधिकारी और समग्र शिक्षा का जिला परियोजना अधिकारी नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही पीएम-पोषण दीव का नोडल अधिकारी बनाया गया है। पीजीटी हरेंद्रकुमार सी. पाठक को दमण जिला पंचायत का सहायक शिक्षा निदेशक, दमण नगरपालिका का शिक्षा अधिकारी और पीएम-पोषण योजना का नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही अन्य जिम्मेदारी भी दी गई है। शैक्षणिक मोर्चे पर सुधार के लिए टीजीटी परितोष शुक्ला को संघ प्रदेश का सहायक शिक्षा निदेशक (अकादमिक) बनाया गया है, जो सभी स्कूलों की शैक्षणिक गतिविधियों और डेटा प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होंगे। इसके अतिरिक्त टीजीटी राजेंद्र आर. मोहिले को दादरा नगर हवेली का जिला परियोजना अधिकारी (समग्र शिक्षा) और समावेशी शिक्षा का राज्य समन्वयक नियुक्त किया गया है। इस फेरबदल में स्कूलों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए नए प्रभारियों की भी घोषणा की गई है। टीजीटी दौलतसिंह पी. सोलंकी को सिलवासा नगरपालिका और दानह जिला पंचायत का शिक्षा अधिकारी नियुक्त करते हुए पीएम-पोषण के तहत सेंट्रलाइज्ड किचन के प्रस्तावों की जिम्मेदारी दी गई है। इसके साथ ही अन्य जिम्मेदारी भी सौंपी गई है। सहायक जिला शिक्षा निरीक्षक (एडीईआई) स्मिता थॉमस को दमण का अकादमिक शिक्षा अधिकारी और समग्र शिक्षा का जिला परियोजना अधिकारी नियुक्त किया गया है, जो निजी और सहायता प्राप्त स्कूलों के मामलों को संभालेंगी। एडीईआई पीयूष मारू को दानह का जिला शिक्षा अधिकारी नियुक्त किया गया है, जिन्हें दीव में एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (ईएमआरएस) के सुचारू संचालन की जिम्मेदारी भी दी गई है। इसके साथ ही प्राथमिक शिक्षक डॉ. सतीश पटेल को समग्र शिक्षा का सहायक राज्य परियोजना निदेशक बनाया गया है, जो समग्र शिक्षा और पीएम-श्री योजनाओं के क्रियान्वयन की निगरानी करेंगे। इनके अलावा पीजीटी बलवंत पाटील और टीजीटी जयेश ए. भंडारी को अगले आदेश तक प्रतिक्षा सूची में रखा गया है। साथ ही पीजीटी गौरांग एच. वोरा को दानह के दादरा में जीएचएसएस का हेड मास्टर के साथ एनसीसी/एनएसएस यूनिट दानह की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जबकि उन्हे दानह खेल शिक्षा अधिकारी के पद से कार्यमुक्त किया गया है। पीजीटी उमेश एन. हलपति को झरी जीएचएसएस के प्रभारी प्राचार्य का पदभार मिला है। पीजीटी अरविंद पी. सोलंकी को जेठीबाई हायर सेकेंडरी स्कूल एवं जीएचएसएस घोघला के प्रभारी प्राचार्य का पदभार मिला है। जबकि एडीईआई अरविंद पटेल को कचीगाम जीएचएसएस का प्रभारी प्राचार्य का पदभार मिला है। शिक्षा निदेशालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों में स्पष्ट किया गया है कि इन सभी पदों पर कार्यरत अधिकारियों को इस अतिरिक्त प्रभार के लिए कोई अतिरिक्त पारिश्रमिक या भत्ता नहीं दिया जाएगा। इस आदेश के जारी होने से ठीक पहले संबंधित पदों का प्रभार संभाल रहे सभी अधिकारियों और शिक्षकों को तत्काल प्रभाव से उनके कर्तव्यों से मुक्त कर दिया गया है। विभाग को उम्मीद है कि इस बड़े प्रशासनिक बदलाव से संघ प्रदेश में चल रही विभिन्न केंद्रीय और स्थानीय शैक्षणिक परियोजनाओं में तेजी आएगी और छात्र कल्याण से जुड़ी योजनाओं का लाभ सीधे जमीन स्तर पर मिल सकेगा।

मेवाड़ के प्रथम जौहर दिवस पर सिलवासा में स्वाभिमान कार्यक्रम, इतिहास और संस्कृति के संरक्षण का लिया संकल्प

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा 30 अगस्त। मेवाड़ के प्रथम जौहर दिवस के अवसर पर श्री क्षत्रिय युवक संघ की ओर से सिलवासा स्थित लायंस कॉलेज परिसर में स्वाभिमान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में रानी पद्मावती के बलिदान एवं मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास को स्मरण करते हुए क्षत्रिय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं, मान्यताओं और ऐतिहासिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का आह्वान किया गया। कार्यक्रम के दौरान अनेक क्षत्राणियों ने रानी पद्मावती के जौहर तथा क्षत्रिय समाज के ऐतिहासिक बलिदानों का उल्लेख करते हुए कहा कि इतिहास केवल अतीत की घटनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य को दिशा देने वाली प्रेरणा है। वक्ताओं ने युवाओं से अपने इतिहास और संस्कृति को समझने तथा अपनी परंपराओं को जीवंत बनाए रखने का आग्रह किया। कार्यक्रम में उपस्थित नवयुवकों ने तेजस्वी अंदाज में अपने पूर्वजों के ऐतिहासिक संघर्षों और बलिदानों को स्मरण करते हुए संकल्प लिया कि बदलते आधुनिक परिवेश में भी वे अपनी सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं और इतिहास को विस्मृत नहीं होने देंगे। युवाओं ने कहा कि नई पीढ़ी को इतिहास की जानकारी के साथ-साथ उससे मिलने वाली प्रेरणा और मूल्यों को भी आत्मसात करना चाहिए। कार्यक्रम में रानी पद्मावती के जौहर को नारी साहस, स्वाभिमान और त्याग के प्रतीक के रूप में स्मरण किया गया। लोककथाओं और जनश्रुतियों के अनुसार, वर्ष 1303 में चित्तौड़गढ़ में रानी पद्मावती ने अन्य महिलाओं के साथ जौहर किया था। 16,000 महिलाओं के जौहर का उल्लेख भी कुछ लोकपरंपराओं में मिलता है, हालांकि इस संख्या और घटना के विवरण को लेकर इतिहासकारों के बीच मतभेद हैं तथा इसका बड़ा हिस्सा बाद की साहित्यिक एवं लोक परंपराओं से जुड़ा माना जाता है।

कार्यक्रम में लायंस इंग्लिश स्कूल के अध्यक्ष फतेह सिंह चौहान ने भी अपने विचार रखे। उन्होंने माता पद्मिनी के बलिदान और चित्तौड़ के जौहर की ऐतिहासिक स्मृति का उल्लेख करते हुए इतिहास लेखन में तथ्यों को नहीं सामने लाने पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ियों को अपने इतिहास की जानकारी निष्पक्षता और प्रमाणिकता के साथ मिलनी चाहिए, ताकि समाज अपने गौरवपूर्ण अतीत से परिचित हो सके। उन्होंने कहा कि इतिहास को केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उससे मिलने वाले स्वाभिमान, साहस, त्याग और सांस्कृतिक मूल्यों को वर्तमान जीवन में उतारना भी आवश्यक है। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों ने मेवाड़ की वीर परंपरा, रानी पद्मावती के बलिदान और क्षत्रिय समाज की ऐतिहासिक विरासत को याद करते हुए अपनी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत बनाए रखने का संकल्प दोहराया। कार्यक्रम ने नई पीढ़ी को इतिहास से जुड़ने और अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया।

वरकुंड ग्राम पंचायत में किसान शिविर का हुआ आयोजन:कृषि विभाग के अधिकारियों ने दिया मार्गदर्शन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 30 अगस्त। वरकुंड ग्राम पंचायत में किसान शिविर का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर कृषि विभाग से उपस्थित प्रवीण बगडा और जिला पंचायत कृषि विभाग के अधिकारी अर्जुन पटेल ने किसानों को खेतीवाड़ी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान उपस्थित किसानों को बीज के चयन, बुआई, खाद, कीटनाशक दवाओं के छिटकाव जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में बताया। इस अवसर पर वरकुंड ग्राम पंचायत सरपंच डॉ. विजय पटेल, जिला पंचायत सदस्य सुनीता हलपति, पंचायत सदस्यों सहित बड़ी संख्या में किसानों की उपस्थिति रही।

दीव के घोघला में समस्त जनरल खारवा समाज ने उत्साहपूर्वक मनाया पारंपरिक वावटा पर्व

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव 30 अगस्त। दीव के घोघला में समस्त जनरल खारवा समाज द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्रावण माह की पूर्णिमा यानि रक्षाबंधन के दिन पारंपरिक वावटा पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। समाज की बहनों ने सुबह कुलदेवी की पूजा करके समुद्र देव की पूजा-अर्चना की और भाईयों को राखी बांधकर पर्व मनाया। घोघला में खारवा समाज द्वारा दोपहर को वावटा की शोभायात्रा निकाली गई थी। खारवा समाज के लोग सुबह से ही उत्सव में जुट जाते है। मत्स्य व्यवसाय और सीमेन से जुडे होने के चलते समाज के लोगों द्वारा कुलदेवी एवं समुद्र देव की विशेष पूजा की जाती है और अपने परिवार की सुरक्षा के लिए प्रार्थना की जाती है। साथ ही आजीविका के साधन नाव को रंग-बिरंगी ध्वजाओं एवं तोरण से सजाते है और स्वजनों को मिठाई खिलाकर पर्व की खुशी मनाते है। दोपहर को घोघला गांव के सातों चौराओं में वावटा की स्थापना की जाती है। सभी चौरा में स्थापित वावटा की विधिवत पूजा-अर्चना की जाती है। इसके बाद क्रम अनुसार सातों वावटा को गांव की शेरियों में भजन-कीर्तन और बैंड-बाजा के साथ धूमधाम से शोभायात्रा के रूप में घुमाया जाता है। घोघला के मुख्य मार्गों से निकलते समय सातों चौरा के वावटा का श्रद्धालु दर्शन करते है। अंत में शोभायात्रा काजीमाम विस्तार में पहुंचती है। जहां पर वावटा को समुद्र में नमन कराकर समुद्र देव से रक्षा के लिए प्रार्थना करके फिर से समुद्र में से वावटा को बाहर निकालकर शोभायात्रा के रूप में काजीमाम से पुनः क्रम अनुसार अपने-अपने चौरा की वावटा को अपने-अपने चौरा में स्थापित किया गया। वावटा उत्सव में बडी संख्या में नागरिक एवं गणमान्य लोग शामिल होते है।

डुंगरा पुलिस ने तेरा तुझको अर्पण के तहत 30 मोबाइल ढूंढकर मालिकों को लौटाया

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, वापी 30 अगस्त। डुंगरा पुलिस ने तेरा तुझको अर्पण कार्यक्रम के तहत पुलिस के उच्चाधिकारियों के मार्गदर्शन में गुम हुए 30 मोबाइलों को ढूंढकर उनके मालिकों को लौटाया है। पुलिस ने सीईआईआर पोर्टल तथा टेक्निकल एनालिसीस के माध्यम से 6,58,235 रूपये के कीमत के 30 मोबाइल फोन ढूंढ निकाले। डुंगरा पुलिस ने उनके मालिकों को डुंगरा पुलिस स्टेशन बुलाकर मोबाइल लौटाया। इस कार्य को पूरा करने में पीआई बी. एन. गोहिल, पीएसआई के. आर. चोटलिया, सहायक पुलिस कांस्टेबल किशन परमार, महिला सहायक पुलिस कांस्टेबल सोनल ओणकिया तथा डुंगरा पुलिस की टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वामी: मारुतिनंदन पब्लिक, संपादक, प्रकाशक व मुद्रक विजय जगदीशचंद्र भट्ट द्वारा गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल, नानी दमण - 396210 से प्रकाशित तथा असली आजादी प्रेस गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल नानी दमण - 396210 से मुद्रित।
(समाचारों के चयन के लिए संपूर्ण जिम्मेदारी पीआरबी एक्ट के अंतर्गत संपादक की होगी। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दमण न्यायालय के अधीन होगा।)